वर्ष–4, अंक–4

बाल किलकारी

जुलाई, 2021
सहयोग राशि : 20/– रुपये

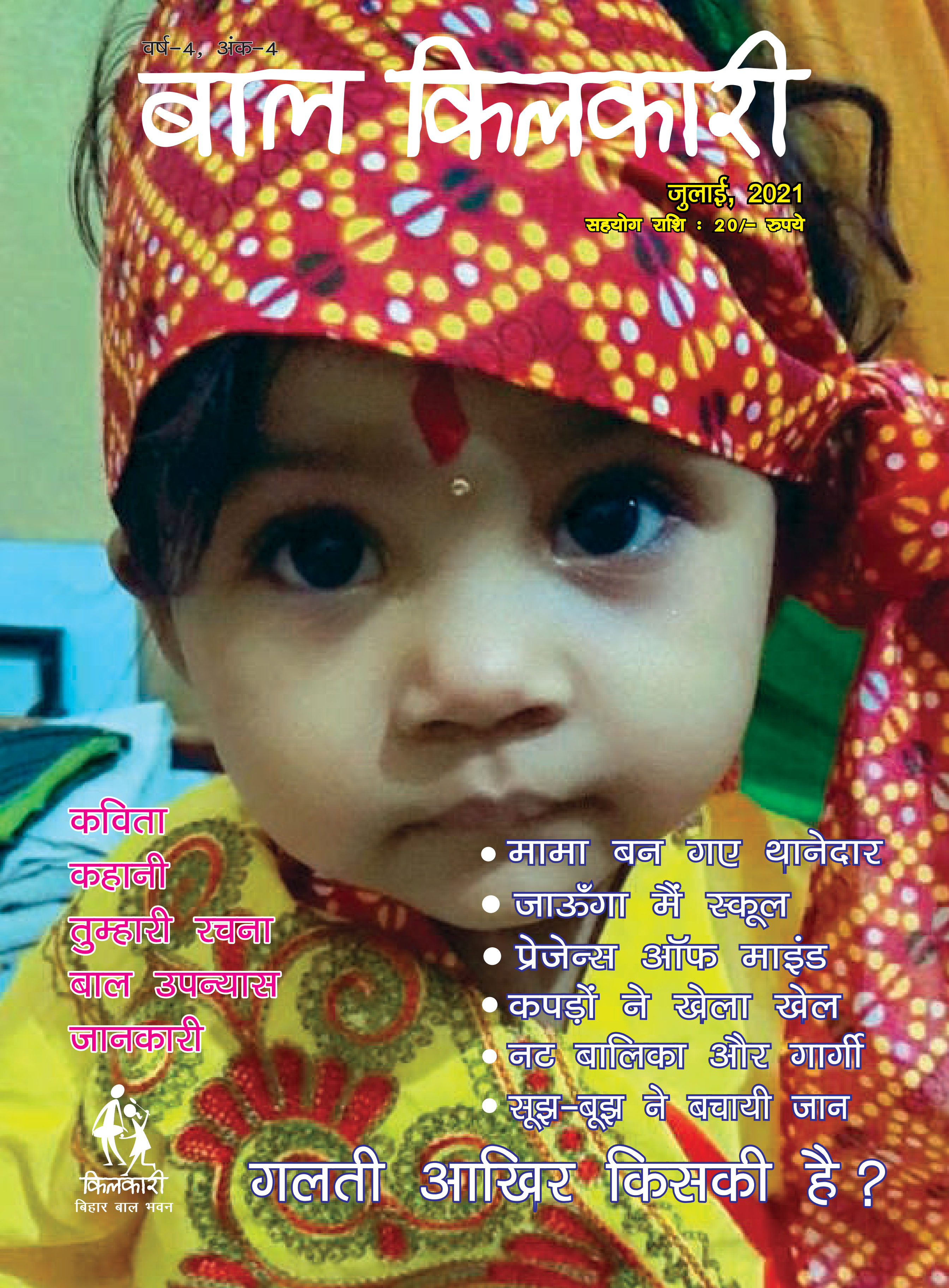

कविता
कहानी
तुम्हारी रचना
बाल उपन्यास
जानकारी

- मामा बन गए थानेदार
- जाऊँगा मैं स्कूल
- प्रेजेन्स ऑफ माइंड
- कपड़ों ने खेला खेल
- नट बालिका और गार्गी
- सूझ–बूझ ने बचायी जान

गलती आखिर किसकी है ?

किलकारी
बिहार बाल भवन

तुम्हारी पेंटिंग

समीक्षा आनंद

वैष्णवी शर्मा, जवाहर नवोदय विद्यालय

मो. यासिर ख़ान

पलक

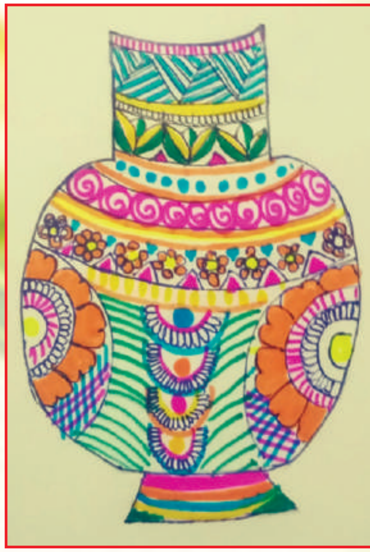

सगुन दूबे

काव्या कुमारी, कक्षा-3वीं, दून पब्लिक स्कूल, पटना

साकेत कुमार, कक्षा-3वीं

वर्ष-4, अंक-4
बच्चों की मासिक पत्रिका

बाल किलकारी

जुलाई, 2021

चिट्ठी-पत्री 2
सम्पादकीय 3
कार्टून का पन्ना 4
कविता
□ चिरैया/जगाये सूरज – डॉ. रामनिवास 'मानव' 5
□ मामा बन गए थानेदार – चक्रधर शुक्ल 6
□ गर्मियों की छुट्टियाँ – अदीबा-इ-आजीज 6
□ जाऊँगा मैं स्कूल – किरण सिंह 20
□ बुरी बात है! – डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल 21
□ प्रेजेन्स ऑफ माइंड – उमाशंकर 'मनमौजी 21
□ भादों के बादल जी – दिनेश विजयवर्गीय 22
□ झाड़ू जादूगरनी – पद्मा चौगांवकर 22
कहानी
□ सही पथ पर – डॉ. फकीरचंद शुक्ला 7
□ कपड़ों ने खेला खेल – मो. मोहम्मद साजिद खान 11
□ मजेदार चीज – निश्चल 13
पहेली की कहानी-6
□ पत्थर के टुकड़ों का कितना वजन – श्यामनारायण श्रीवास्तव 35
□ हिम्मत – मीनू त्रिपाठी 36
□ नट बालिका और गार्गी – राजेश वर्मा 40
□ सूझ-बूझ ने बचायी जान – उषा सोमानी 42
□ बौरा – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' 45

एकांकी
□ कौन रोता है? – डॉ. मोहम्मद अरशद खान 15
तुम्हारी रचना 23
गतिविधि
□ कुछ-कुछ बनाना सीखें – सुधीर कुमार 27
भाषा
□ हिंदी के मिलवाँ शब्द(5) – अंकिमचंद्र 28
वैज्ञानिक बाल उपन्यास : पहली किस्त
□ गलती आखिर किसकी है? –अखिलेश श्रीवास्तव चमन 29
जानकारी 48

परिकल्पना	सम्पादक	कला एवं आवरण	सम्पादन सहयोग
ज्योति परिहार	शिवदयाल	उमेश शर्मा	सीताराम शरण

किलकारी बिहार बाल भवन, सैदपुर, पटना-800 004 के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्रीमती ज्योति परिहार द्वारा किलकारी बिहार बाल भवन, राष्ट्रभाषा परिषद परिसर, सैदपुर, पटना-800004 से प्रकाशित व द गाँधी इन्टरप्राईजेज, नया टोला, पटना-800004 से मुद्रित। सम्पादक – शिवदयाल।
आवरण चित्र – इंटरनेट

सदस्यता शुल्क : व्यक्ति और संस्था के लिए वार्षिक – 200/-

चिट्ठी-पत्री

● **बाल किलकारी** पत्रिका का जून अंक प्राप्त हुआ। हमेशा की भाँति इस बार का अंक विविधता लिए हुए आलेख, बाल कहानियों, बाल काव्य, बाल उपन्यास तथा रचनात्मक गतिविधियों को समेटे दिखा। संपादकीय के माध्यम से कचरा प्रबंधन की आवश्यकता को रेखांकित किया गया जो आज के समय की महती आवश्यकता है।

जहाँ 'दूध की गेंद' तथा 'काढ़ा और सुई' कहानियाँ मनोरंजन प्रदान करती हैं, वहीं 'काला फंगस' के माध्यम से समसामयिक जानकारी रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई। बाल काव्य के अंतर्गत 'गौरैया का गीत', 'बस्ते का बोझ' और 'मीठा पानी' कविताएँ रोचक व शिक्षाप्रद हैं।

'कुछ-कुछ बनाना सीखें' और 'हिंदी के मिलवाँ' शब्द के द्वारा रोचक जानकारियाँ प्रस्तुत की गई हैं। 'भैंस और दूध बराबर' पहेली, दिमागी कसरत करवाने में सफल हुई है। 'खिलौने और भोला' कहानी बच्चों को स्वदेशी के प्रति प्रेरित करती है तो 'बहादुर सिम्मी' शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है जो बतलाती है कि शिक्षा और बहादुरी दोनों का जीवन में बहुत महत्व है। टिल्लू कॉमिक रोचक है, तो बाल गंगाधर तिलक से संबंधित जानकारियाँ चित्रकथा के माध्यम से सुरुचिपूर्ण ढंग से समायोजित की गईं हैं। संप्रति **बाल किलकारी** का यह अंक बाल पाठकों को अवश्य पसंद आएगा। – **कर्नल प्रवीण त्रिपाठी,** नोएडा।

● मुझे हर बार की तरह इस बार की पत्रिका भी बहुत अच्छी लगी। सभी चिट्ठियाँ संपादकीय एवं कार्टून का पन्ना सभी पढ़कर बहुत खुशी हुई और बहुत अच्छा भी लगा। तुम्हारी पेंटिंग में प्रकाशित सभी चित्र बेहद खूबसूरत लगे। पत्रिका में प्रकाशित तरह-तरह की कविताएँ एवं कहानियाँ पढ़कर बहुत मजा आया। इस पत्रिका के आखिरी पृष्ठ में महानायक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी के बारे में और जानकारी मिली जिसे पढ़कर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। हमारी **बाल किलकारी** पत्रिका को इतना बेहतरीन बनाने के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। अब इंतजार है जुलाई अंक का। – **नीति झा,** कक्षा-9वीं, आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय।

● वाह! अद्भुत आकर्षक आवरण के साथ-साथ उत्कृष्ट रचनाएँ। पत्रिका का सम्पादकीय विचारणीय है। जहाँ एक ओर कचरा के प्रति चिंता व्यक्त की गई है, वहीं इसके निस्तारण की विधि के आविष्कार की बात अच्छे भविष्य के प्रति आशा बंधाती है। दूसरे ही पृष्ठ पर दिए गए, बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र बहुत सुन्दर हैं। इतनी सुन्दर पत्रिका तैयार करने के लिए संपादक मण्डल बधाई का पात्र है। – **डॉ. दिनेश पाठक शशि,** मथुरा।

● हमेशा की तरह इंतजार की घड़ियाँ खत्म हुईं और आखिर **बाल किलकारी** का जून अंक आया। हर बार की तरह इस बार की संपादकीय भी 'कचरे की ईंटें' के जरिए बच्चों को इशारों-इशारों में काफी कुछ समझाने का प्रयास किया गया है। इस अंक की कविताएँ तथा कहानियों के साथ-साथ सभी नियमित स्तंभों ने अंत तक पढ़ते रहने को विवश कर दिया। कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई का पात्र है। – **वसीम अहमद नगरामी,** 10/42, नगराम बाजार, लखनऊ-226303।

अतिशय सुन्दर चित्र मनोहर
रचना प्यारी-प्यारी।
धन्यवाद संपादक मंडल किया
परिश्रम भारी।
बड़ी सजीली मन को भाती
शुभकामना हमारी।।
दिशा-दिशा में रहे गूँजती सदा
बाल किलकारी।।

– **गोपाल माहेश्वरी,**
संवादनगर इन्दौर म.प्र.452001

संपादकीय

फसलों का मौसम

प्यारे बच्चो,

बरसात के दिन हैं। ताल-तलैया सब लबालब भरे हैं। गरमी में सूख गई नदियाँ आस-पास के क्षेत्रों को भी डुबो रही हैं। कितने ही स्थानों पर बाढ़ की स्थिति है। खेतों में पानी भरा है और यही मौसम है धान की रोपनी का। जो बच्चे गाँवों से जुड़े हैं, वे जानते है कि धान के बीजों से पहले छोट-छोटे पौधे उगाए जाते हैं। इन्हें बीचड़ कहते हैं। इन्हीं बीचड़ों को पानी से भरे खेतों में रोपा जाता है। धान की फसल को बहुत पानी की जरूरत होती है न। आजकल हमारे कृषि वैज्ञानिकों ने धान की ऐसी किस्में भी विकसित भी तैयार हो जाती हैं जो कम पानी में भी तैयार हो जाती है। लेकिन है तो यह बरसात की ही फसल! बरसात में एक धान ही तो नहीं होता, और भी फसलें उगाई जाती हैं। तुम्हें भुट्टे पसंद हैं न, यानी मकई या मक्का इसी मौसम की फसल है। उसी तरह ज्वार, बाजरा और कपास भी इसी मौसम की फसलें हैं। इन्हें खरीफ की फसलें कहते हैं। रोपे जाने से लेकर तैयार होने के बाद काटे जाने तक बरसात शुरू होकर बीत जाता है। मतलब यह कि खरीफ की फसलों का समय है – जून-जुलाई से सितम्बर-अक्तूबर (अषाढ़ से आश्विन माह तक)। इस दौरान अगर कम पानी हो या बहुत अधिक पानी हो तो पैदावार कम होती है। अच्छा, तुम्हें यह तो मालूम होगा न कि धान से ही चावल निकाला जाता है!

फसलों का एक और मौसम होता है, जाड़ों का मौसम। इस मौसम में उगाई जाने वाली फसलों को रबी की फसलें कहते हैं। इनमें शामिल हैं – गेहूँ, चना, मटर, सरसों, तिल, तीसी आदि। तुमने दलहन और तिलहन के बारे में सुना है ? दलहन उन फसलों की पैदावार को कहते हैं जिनमें किस्म-किस्म की दालें उगाई जाती हैं – चना, मसूर, मूँग, अरहर आदि। दूसरी ओर तिलहन में वे फसलें आती हैं जिनका उपयोग तेल निकालने में किया जाता है। सरसों, राई, तिल और तीसी आदि प्रमुख तिलहन फसलें हैं। अब जानने की बात यह हैं कि दलहन और तिलहन दोनों ही रबी की फसलें हैं। इन्हें अक्तूबर-नवम्बर से लेकर मार्च-अप्रैल तक उगाया और काटा जाता है। यह बात तो तुम्हें समझ में आ ही गई होगी कि रबी की फसलों को पानी की कहीं कम जरूरत होती है।

फसलों के बारे में जानना, फसल-चक्र को समझना हर किसी के लिए भी जरूरी है। फसलें हमारे जीवन का आधार हैं। उनसे निकले अनाज पर ही पूरी दुनिया की मानव आबादी पलती है। यदि फसलों की पैदावार कम हो जाए, सूखे या बाढ़ या किसी अन्य कारण से, तो हाहाकार मच जाता है। इससे जो स्थिति उत्पन्न होती है, उसे खाद्य संकट कहते हैं। दुनिया के सभी देशों में, यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र में भी खाद्य संकट से निपटने का एक पूरा तंत्र होता है। तुमने विश्व खाद्य संगठन (वर्ल्ड फूड ऑरगनाइजेशन) का नाम तो सुना होगा। यह संयुक्त राष्ट्र की संस्था है जो खाद्य संकट का सामना कर रहे देशों की सहायता करती है।

अभी इतना ही। फसलों पर फिर कभी और बातें करेंगे। पत्र लिखना।

तुम्हारा
शिवदयाल

कार्टून का पन्ना : टिल्लू

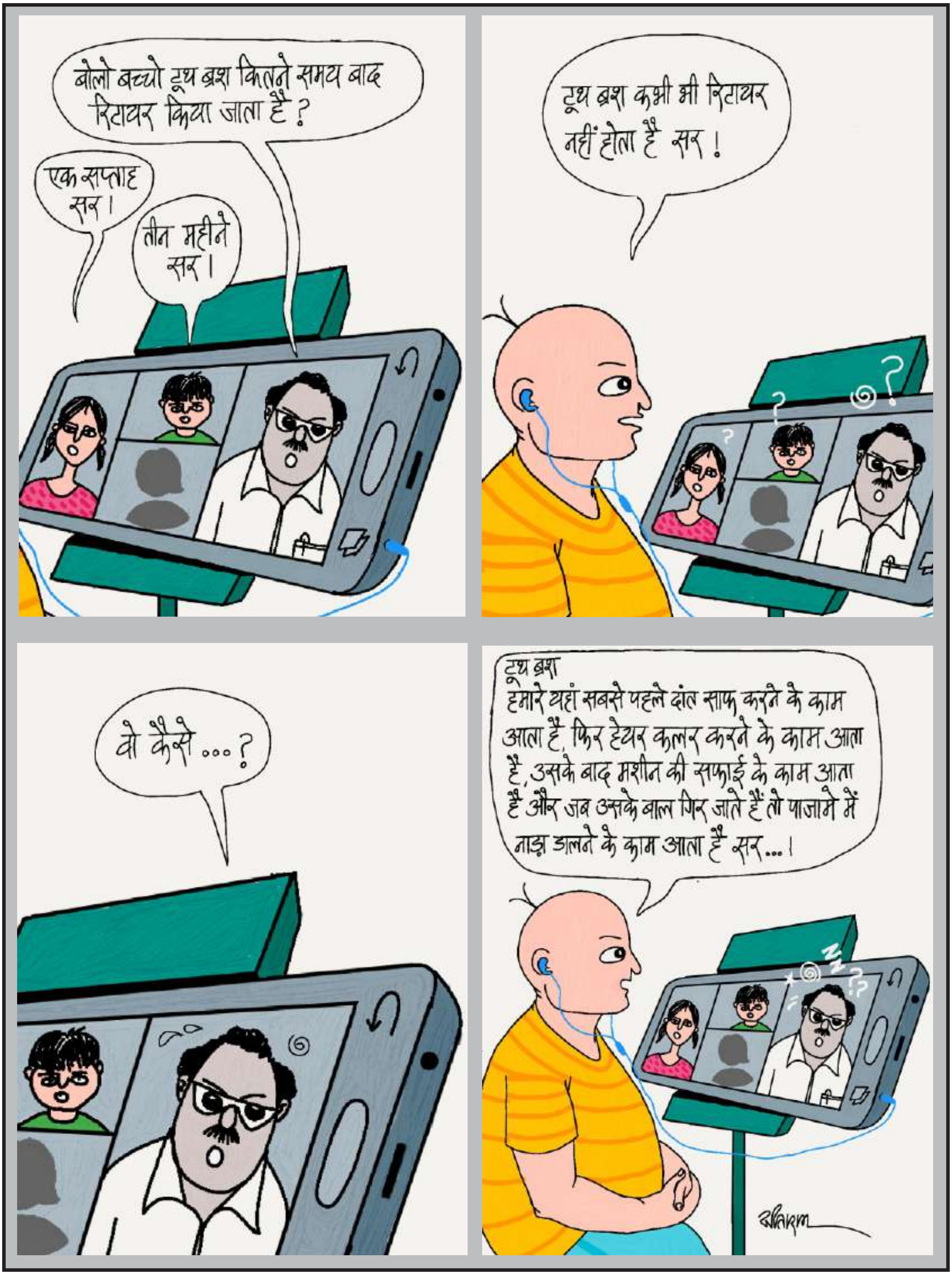

डॉ. रामनिवास 'मानव' की दो कविताएँ

जगाये सूरज

फेरी रोज लगाये सूरज।
आकर हमें जगाये सूरज।
हो कितना भी घोर अंधेरा,
पल में मार भगाये सूरज।
खुले हाथ से बाँटे खुशियाँ,
धरती को सरसाये सूरज।
जब-तब खेले छुपन-छुपाई,
बदली में छुप जाये सूरज।
लेकिन जब भी गुस्सा आये,
गर्मी से झुलसाये सूरज।
दिन-भर बाँटे धूप सभी को,
शाम ढले सो जाये सूरज।

■■■

चिरैया

क्यों इतनी बेचैन चिरैया।
आओ इससे पूछें भैया।
बोलो, तनिक चिरैया बोलो।
राज सभी निज मनके खोलो।
चिड़िया पास हमारे आई।
मन की सारी व्यथा सुनाई।
पत्थर के घर, जगह न खाली।
लगी खिड़कियों पर भी जाली।
बोलो, कैसे भीतर जाऊँ?
और घोंसला कहाँ बनाऊँ?
पेड़ कटे सब, ठौर नहीं है।
घर जैसा कुछ और नहीं है।
घर की चिन्ता मुझे सताती।
तिनका भी मैं जोड़ न पाती।
बोलो, अब मैं कहाँ रहूँगी?
कैसे सर्दी-धूप सहूँगी?
हमने पीड़ा उसकी जानी।
बातें सारी उसकी मानी।
खिड़की खोल बुलाया उसको।
कोने में बैठाया उसको।
चिड़िया को भी मिला ठिकाना।
फूटा मन से मोहक गाना।
घर तो घर ही होता भैया!
मानव हो या सोन चिरैया।

■■■

■■■

कविता

मामा बन गए थानेदार

चक्रधर शुक्ल

आज का ताजा समाचार
बंदर मामा बन गए थानेदार।
लिए हाथ में बेंत
घूमते गली–गली,
चोर काँपते, गिरहकटों
की खाट खड़ी।
बड़ी चौकसी
अब सड़कों पर होती है,
गश्त लगाती पुलिस
कहाँ अब सोती है।
मूँछ ऐंठते
घुड़की से डरवाते हैं
थानों पर अब चोर
नजर नहीं आते हैं।
घूस नहीं लेता है कोई
हुआ सुधार।
बंदर मामा बन गए थानेदार।

गर्मियों की छुट्टियाँ

अदीबा–इ–आज़ीज़

गर्मियों की छुट्टियाँ
गर्मियों की छुट्टियों में,
दादा–दादी का गाँव चलो।
वहाँ आप का इंतजार,
बेचैनी पक्षी–अलोपार।।
और गंदी बिल्ली भी
और अच्छा लगा मुर्ग़ा।
दही और दूध, चक्का*
कुल्चा और फतिरमस्का**।।
मेहरबान दादी जी हैं,
अच्छा किसान–दादा है।
दरांती और बगीचा,
चींक–चींक के और नया चाँद।।
नदी शोर से बह रही है,
गाँव से अच्छी खुशबू आ रही है!

*चक्का–कट्ठा दूध से प्राप्त करता जाता है

**फतिरमस्का–ताजिक राष्ट्रीय लैटब्रेड (fatir अखमीरी आटा लैटब्र, maska मक्खन)

■■■

सही पथ पर

डॉ. फकीरचंद शुक्ला

अक्षित के लिए आज कक्षा में बैठे रहना भी कठिन लग रहा था। सारा शरीर टूटता–सा अनुभव हो रहा था। वह तो आज अवकाश लेना चाहता था मगर आज केमिस्ट्री तथा मैथ के सर को कॉपियाँ चेक करनी थीं। इसलिए आज अगर वह स्कूल ना जाता तो जुर्माना भी भरना पड़ता था तथा पिटाई भी हो जाती।

सुबह तो उससे बिस्तर से उठा भी नहीं जा रहा था। पापा के डाँटने पर ही वह बिस्तर से उठा। और फिर जल्दी–जल्दी तैयार होकर स्कूल के लिए चल पड़ा था। नाश्ता भी उसने अपने ढंग से नहीं किया था। उसकी तो जैसे भूख ही मर गई थी।

छुट्टी का घंटा बजने पर बहुत तेज–तेज कदमों से घर की ओर चल पड़ा था। भारी बस्ता और अस्वस्थ शरीर के कारण उससे ढंग से चला भी नहीं जा रहा था। फिर उसका अपना भार कौन–सा कम था! एक क्विंटल तो होगा ही। उसके मोटापे के कारण सभी सहपाठ उसे 'छोटा हाथी' कहकर चिढ़ाते रहते थे। वह मन–ही–मन कुढ़ता रहता। वह कर भी क्या सकता था। वैसे वह कोई अधिक तो नहीं खाता था। जितना अन्य बच्चे खाते हैं उतना ही खाता होगा, पर फिर भी न जाने क्यों उसका मोटापा बढ़ता ही जा रहा था।

प्रायः वह एक्टिवा पर ही स्कूल आता–जाता था, पर दो दिन से उसका एक्टिवा खराब पड़ा था। पापा ने ठीक नहीं करवाया था। उन्हें कार्यालय से समय ही नहीं मिल पाता था। इसलिए आजकल उसे पैदल ही स्कूल आना–जाना पड़ता था।

वह जैसे–तैसे घर पहुँचा।

उसने झट से बस्ता एक ओर पटका तथा पास ही रखें सोफे पर लेट गया।

उसकी साँस बुरी तरह फूली हुई थी।

मम्मी ने पानी का गिलास लाकर उसके निकट रखते हुए पूछा –"खाना लगा दूँ ?''

''नहीं, अभी नहीं। बहुत थका हुआ हूँ। पहले थोड़ा आराम कर लूँ।"

और लेटे–लेटे ही उसने रिमोट से टीवी चला दिया तथा तन्मय होकर टीवी पर प्रोग्राम देखने लगा। खेलकूद में उसे रत्ती भर भी रुचि न थी। उसके पापा भी प्रायः उसे टोकते रहते थे – "बाहर जाकर अन्य बच्चों की तरह क्यों नहीं खेलता ? जब देखो सोफे पर ही लेटा रहता है और टीवी देखता रहता है।"

मगर उनकी बातों का अक्षित पर रत्ती भर भी असर न होता।

2

पर कभी–कभी अक्षित के मन में यह विचार अवश्य आता कि उसे भी बाहर जाकर अन्य बच्चों की तरह खेलना चाहिए, लेकिन अगले ही पल उसका विश्वास डगमगा जाता। बाहर जाएगा तो बच्चे उसे 'छोटा हाथी' कहकर चिढ़ाएँगे ....और फिर मोटापे के कारण उससे ज्यादा चला भी नहीं जाता। इसलिए उसका जोश एकदम ठंडा पड़ जाता था।

आज स्कूल से लौटने पर जब उसे पता चला कि उसके बड़े पापा (ताऊ जी) का बेटा अर्चित ऑस्ट्रेलिया से आ रहा है तो उसका मन बल्लियों उछल पड़ा था। अर्चित एक महीने के लिए अपने कोर्स वर्क के सिलसिले में भारत आ रहा था। उसे उनके यहाँ ही उसने ठहरना था।

.... और फिर एक दिन अर्चित आ गया। उसे देखकर तो अक्षित की आँखें खुली की खुली रह गई थीं। उसका शरीर तो सुडौल था ही, देखने में भी वह काफी स्मार्ट लग रहा था। शायद ऑस्ट्रेलिया की आबो–हवा ही ऐसी होती होगी। अक्षित ने मन–ही–मन सोचा।

अगले दिन अर्चित प्रातः ही उठ बैठा।

''चल उठ भी जा अब। इतनी देर तक सोते हैं क्या, चल सैर करने चलते हैं", अर्चित ने उसे बिस्तर पर ही झकझोरते हुए कहा।

अक्षित ने बड़ी मुश्किल से आँखें खोलीं तथा मरियल–सी आवाज में बोला – ''इतनी सुबह–सुबह मुझसे नहीं उठा जाता। मुझे तो नींद आ रही है।''

''बातें कम बना। जल्दी उठ।'' अर्चित ने उसे बाजू से पकड़कर उठाते हुए कहा – ''प्रातःकाल हवा में प्रचुर मात्रा में ऑक्सीजन होती है। सैर करने से शरीर निरोग तथा चुस्त–दुरुस्त रहता है।''

न चाहते हुए भी अक्षित को उठना पड़ा। मगर वह मन–ही–मन सोच रहा था कि क्या मुसीबत है। वह तो आज तक सात बजे से पहले कभी बिस्तर से नहीं निकला था। उठते ही झटपट तैयार होकर आठ बजे स्कूल के लिए चल देता था।

और अनमना–सा वह अर्चित के साथ पार्क में चला आया तथा झट से वहीं बेंच पर बैठ गया। मगर अर्चित के कई बार कहने पर

भी वह सैर करने के लिए नहीं माना।

''चल सैर नहीं करनी तो तुम्हारी मर्जी। कल कर लेना। पर यहाँ बेंच पर बैठे-बैठे ही खुली हवा में लंबी-लंबी साँस लेता रह। शरीर को ऑक्सीजन तो मिलेगी।'' और अर्चित ने उसे अनुलोम-विलोम करने का उचित ढंग समझा दिया।

3

उसकी बात मानकर कुछ देर तो अक्षित गहरी लंबी साँस लेता रहा। मगर फिर बैंच पर ही आराम से बैठ गया।

उस दिन तो अक्षित आराम से बेंच पर बैठा रहा लेकिन अगले दिन अर्चित ने उसकी एक न सुनी। वह उसे साथ लेकर पार्क में चलने लगा – ''जितनी भी आसानी से चल सकता है, उतनी देर तो चल ना। लेकिन बेंच पर मत बैठा रह।''

..... और न चाहते हुए भी अक्षित को उसके साथ पैदल चलना पड़ा।

अक्षित अपना अधिक समय टीवी देखने में ही लगा दिया करता था। अर्चित ने इसके लिए भी उसे एक दिन टोक दिया – ''क्यों टीवी देखने में इतना समय बर्बाद करता है ? सभी कार्य समय सारणी बना कर किया कर। शायद तुम्हें मालूम न हो ऑस्ट्रेलिया में सभी विद्यार्थी पढ़ाई के साथ-साथ पार्ट टाइम नौकरी भी करते हैं। यह तभी संभव होता है जब हम सब समय सारणी बना कर चलते हैं।''

और अब तो न चाहते हुए भी अक्षित को दिन-ब-दिन अपने आपको अर्चित के आदेश के अनुसार ढालना ही पड़ रहा था।

लेकिन कुछ दिनों के पश्चात प्रतिदिन सैर करने की वजह से अक्षित को भी सैर करने में आनंद आने लगा था। अब उसने सैर करने, पढ़ने-लिखने तथा टीवी देखने की

समय सारणी बना ली थी तथा उसी के अनुसार अपना काम करने लगा था। अब वह अपना समय टीवी देखने में कम ही व्यतीत करता था।

एक माह के पश्चात अर्चित ऑस्ट्रेलिया तो लौट गया मगर अक्षित के जीवन में जैसे नया उत्साह भर गया था।

अब तो जब कभी किसी कारणवश अक्षित प्रातः सैर को न जा पाता तो दिन भर उस पर मानो सुस्ती तथा उदासी छाई रहती। इसलिए वह शाम को जितना भी पैदल चल पाता, अवश्य चलता। शारीरिक तौर पर भी उसे स्फूर्ति का अनुभव होने लगा था तथा उसे यह भी लगने लगा था मानो पढ़ने में भी उसकी एकाग्रता बढ़ गई हो। उसका मोटापा भी दिन–प्रतिदिन उसका साथ छोड़ता जा रहा था।

इसी तरह कुछ महीने बीत गए।

अब तो अक्षित स्कूल में भी खेलकूद में भाग लेने लगा।

समय गुजरता जा रहा था।

कुछ ही दिनों में स्कूल की वार्षिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन होना था।

अक्षित ने भी 100 मीटर दौड़ के लिए अपना नाम लिखवा दिया था।

आखिर प्रतियोगिता का दिन आ गया। निश्चित समय पर दौड़ में भाग लेने वाले विद्यार्थी लाइन पर आकर खड़े हो गए।

4

अक्षित का दिल डर के मारे तेज–तेज धड़कने लगा। ना जाने अब क्या होगा! क्या वह दौड़ पूरी कर पाएगा? मगर शीघ्र ही उसने अपने भय पर नियंत्रण कर लिया। उसके भाई अर्चित ने उसे समझाया कि कभी भी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए तथा सदैव स्वयं पर यह विश्वास होना चाहिए कि मैं यह काम कर सकता हूँ।

..... और फिर सीटी बजते ही दौड़ प्रारंभ हो गई।

अक्षित पूरे जोर से दौड़ने लगा। उसे मन–ही–मन आश्चर्य हो रहा था कि कैसे हर पल वह अन्य प्रतियोगियों को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ता जा रहा था।

उसके सहपाठी भी उसको प्रोत्साहित करते हुए जोर–जोर से चिल्ला रहे थे – ''बकअप अक्षित... बकअप..... और तेज ....और तेज.... चक्क दे फट्टे...''

आखिर अक्षित ने जीत की लाइन सबसे पहले पार कर ली।

और अब विक्ट्री स्टैंड पर एक नंबर पर खड़े अक्षित को जैसे स्वयं पर विश्वास नहीं हो रहा था कि कैसे कभी पैदल चलने में भी कठिनाई अनुभव करने वाला लड़का आज दौड़ में प्रथम स्थान पर आ गया था। वह मन–ही–मन गौरवान्वित अनुभव कर रहा था।

मगर उसे इस बात की अधिक प्रसन्नता हो रही थी कि कैसे अर्चित के सुझाव के अनुसार समय सारणी बनाकर काम करने से उसकी पढ़ाई में भी सुधार आ गया था तथा शारीरिक तौर पर वह चुस्त दुरुस्त भी हो गया था।

■■■

कहानी

कपड़ों ने खेला खेल

डॉ. मोहम्मद साजिद खान

"चलो खेलते हैं।" शर्ट ने कहा।

"पर खेलना क्या है?" मोज़े का सवाल था।

उनकी बात सुन रहे जूते ने कहा–"कुछ भी खेलते हैं।" फिर कमरे में इधर से उधर खट–पट–खट–पट चलने लगा।

"तो ठीक है। हम छुपन–छुपाई खेलते हैं," पैंट ने कहा।

इस खेल के लिए जूते, मोज़े, शर्ट, पैंट और रूमाल तो तैयार थे, पर टाई नहीं। वह बोली–"न बाबा न, मैं नहीं खेलूँगी। दिनभर गले में लटके–लटके मैं तो ऊब गई। मैं तो चली सोने।" कहकर वह एक खूँटी पर लटक गई।

सभी अलमारी से उतरकर नीचे आ गए।

"हममें से चोर कौन बनेगा?" पैंट ने पूछा।

"ये बनेगा न!" सभी ने रूमाल की ओर इशारा करते हुए उसकी खिल्ली उड़ाई–"पिद्दी भर तो है!"

"ठीक है!" रूमाल ने बेमन से कहा।

सभी जल्दी–जल्दी छिपने को चल पड़े।

शर्ट जल्दी से उछलकर अलगनी पर

लटक गई। वह भी तौलिए के पीछे।

मोज़े ने बेड के नीचे की राह ली।

पैंट कम चालाक न था। वह धुलाई होने वाले गंदे कपड़ों में छिप गया।

जूता अपनी 'खट-पट' छिपाता हुआ भागा, पर रूमाल ने जान लिया कि वह बाहर वाली रैक में चढ़ गया है।

एक से दस तक गिनने के बाद अब बारी थी सभी को ढूँढ़ने की।

रूमाल ने जल्दी से जाकर जूते को धर दबोचा।

वह कमरे के कोने पर गया, तो शर्ट पकड़ी गई।

बेड के नीचे झाँका, तो मोज़े भी पकड़े गए।

पर पैंट अब भी नदारद था। रूमाल उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते थक गया।

जब वह हार गया, तो सभी मिलकर उसे ढूँढ़ने लगे।

अचानक पापा ने दस्तक दी। सभी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उन्हें ऑफ़िस जाना था। साढ़े नौ बज चुके थे।

पापा ने अलमारी खोली, तो कोई कपड़ा वहाँ नहीं था।

पर थोड़ी ही देर में सभी बरामद हो गए।

पैंट थोड़ी देर से मिला। पापा गुस्से से भर उठे-''मेरे इस साफ़-सुथरे पैंट को आख़िर किसने गंदे कपड़ों में डाल दिया ?''

पापा ने उसे ज़ोर-ज़ोर से झटक-झटक कर झाड़ दिया। बेचारा पैंट लिजपिज हो गया।

शर्ट को दो झटके दिए कि उसकी हड्डी-पसली नरम हो गई।

मोज़े की धूल झाड़ने के लिए उसे ज़ोर से झाड़ दिया। ''आह, मेरी कमर!'' वह चिल्ला उठा।

टाई को भी उन्होंने खोलकर फिर से खूब कसकर बाँध दिया। उसकी साँसें फूलने लगीं।

जूते का मुँह पुराने कपड़े से रगड़ दिया। उसे स्किन पर तेज़ जलन होने लगी।

पापा ने जल्दी-जल्दी सबको पहना और ऑफ़िस के लिए रेडी हो गए।

सबकी बुरी हालत देख रूमाल हँसते-हँसते लोटपोट हो गया।

पर रूमाल का हँसना सभी को चुभ रहा था।

पापा ऑफ़िस जाने लगे, पर रूमाल को भूल गए।

ये देख सभी खुश हो उठे। वे चिल्लाए-''अब सड़ो घर में अकेले पड़े-पड़े।''

पर रूमाल भी कम चालाक न था। उछलकर पैंट की जेब में घुस गया।

''ऐ-ऐ, भागो...भागो...।'' पैंट चिल्लाने लगा।

लेकिन पापा ने जेब में हाथ डाला तो खुश हो गए-''अरे, इसे तो भूल ही गया था।'' उन्होंने रूमाल को क़ायदे से तह करके जेब में रख लिया।

''हुँह...!'' पैंट मुँह बनाकर रह गया।

■■■

मजेदार चीज

निश्चल

"**कि**तना मजेदार होता होगा न!" बंटी, दुकान के शीशे में रखी किसी चीज को देखकर बोला।

"क्या ?" पास ही मूँगफली बेच रहे उसके दोस्त अरशद ने पूछा।

बंटी कुछ बता पाता उससे पहले उसके पिता ने उसे सामने की दुकानों पर चाय देकर आने के लिए कहा। वैसे भी आज काम ज्यादा है, क्योंकि आज नया साल है। इस वजह से बाज़ार में रौनक भी ज्यादा है। बंटी सामने की कुछ दुकानों पर चाय देने चला गया। अरशद ने सामने दुकान में देखा तो समझ गया कि बंटी किस चीज की बात कर रहा था।

चार जनवरी को बंटी का जन्मदिन होता है। वैसे उसका जन्म कब हुआ उसे नहीं पता, लेकिन हाँ, सरकारी स्कूल के हेडमास्टर साहब ने चार जनवरी के रूप में उसे जन्मतिथि तो दे दी थी। लेकिन कभी उसका जन्मदिन मनाया गया हो, उसे याद नहीं।

बंटी रोज दोपहर स्कूल से आने के बाद अपने पिता के साथ चाय की दुकान पर उनकी मदद करता है। और देर रात घर जाकर थोड़ी बहुत पढ़ाई, हालाँकि दुकान पर मौका मिलने पर वह स्कूल से मिला काम भी कर लेता है।

अरशद उसका खास दोस्त है जो बस्ती में उसके घर के पास ही रहता है। वह भी दोपहर में स्कूल से आने के बाद जाड़ों में

मूँगफली और गर्मियों में आइसक्रीम बेचता है। दोनों एक-दूसरे की मन की बात खूब समझते हैं। दोनों को पढ़ने का भी खूब शौक है। इसलिए दोनों ही जेब खर्च से नई-नई किताबें खरीदते हैं। इस बार अपने जेब खर्च से अरशद डिक्शनरी खरीदना चाहता है, क्योंकि उसे अंग्रेजी सीखने की बहुत चाहत है। वह भी साहब लोगों की तरह फरटिदार अंग्रेजी बोलना चाहता है।

अरशद रात को जब घर आता तो बचत के डिब्बे में कुछ पैसे जरूर डालता। बाकी वह अपनी अम्मी को देता ताकि घर के खर्च में मदद मिल सके। लेकिन आज अरशद ने डिब्बे से सारे पैसे निकाले और हिसाब जोड़ा तो कुल चार सौ दस रुपए निकले, जो इस महीने की अब तक की कमाई से बचे थे, जेब खर्च के नाम पर। और इन्हीं बचत के रुपयों से उसे डिक्शनरी खरीदनी है। लेकिन डिक्शनरी, जो अरशद को चाहिए, वह कम-से-कम पाँच सौ रुपए की आएगी। तो उसे अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

लेकिन अरशद ने कुछ सोचा और मुस्कराकर तीन सौ रुपए निकाल लिए। उसकी अम्मी, जो बहुत देर से उसकी उधेड़बुन देख रहीं थीं, उसके पास आईं और सिर पर हाथ फेरते हुए बोलीं, ''क्यों बेटा, इस बार डिक्शनरी का सपना पूरा नहीं करना, जो बचत के रुपए निकाल रहे हो!''

अरशद एक सौ दस रुपए डिब्बे में रखते हुए माँ से बोला, ''हाँ माँ, सपना ही तो पूरा करना है।''

नया साल शुरु हुए आज चौथा दिन है। शाम का वक्त है। बस्ती में सभी बच्चे खेल रहे हैं। आज अरशद समय से पहले ही घर आ गया है। उसके हाथ में एक बड़ा-सा थैला है, जिसमें एक बड़ा-सा डिब्बा है। उसने थैला मेज पर रखा और बस्ती के सभी बच्चों को बुलाने के लिए चला गया। थोड़ी ही देर में, पूरी बस्ती के बच्चे कमरे में जमा हो जाते हैं, और सोचते हैं कि न जाने क्या बात है जो अरशद ने उन्हें इस तरह बुलाया है।

रात के नौ बज चुके हैं, और बंटी के आने का समय भी हो चुका है। बंटी जब बस्ती में आता है तब उसे पता लगता है कि अरशद ने सभी बच्चों को अपने घर बुलाया है। उसके कदम अरशद के घर की ओर बढ़ जाते हैं। बंटी जब अरशद के घर पहुँचता है तो वह देखता है कि वहाँ तो अंधेरा है। वह अरशद को आवाज़ लगाता है। जब अंदर से कोई जवाब नहीं आता तो वह धीरे से दरवाजे को खोलता है। और यह क्या, दरवाजा खोलते ही लाइट जल उठती है और सारे बच्चे एक साथ गा उठते हैं – ''हैप्पी बर्थडे टू यू.... हैप्पी बर्थडे बंटी.....हैप्पी बर्थडे टू यू...।'' सामने मेज के उस ओर अरशद मुस्करा रहा है। बंटी की नज़र जब मेज पर पड़ती है तो वह खुश होकर कहता है, ''अरे यार अरशद, केक!''

अरशद के चेहरे पर खुशी तैर गई और वह बोला, ''हाँ दोस्त, वही शीशे के पार की मजेदार चीज, जिसे तू देखता तो रोज़ है लेकिन स्वाद आज चखेगा।''

''...और हमको चखाएगा भी,'' पास ही खड़ी रौनक खिलखिलाकर बोली और सभी बच्चे खुशी से तालियाँ बजाने लगे। बंटी ने अरशद को बाँहों में भर लिया।

■■■

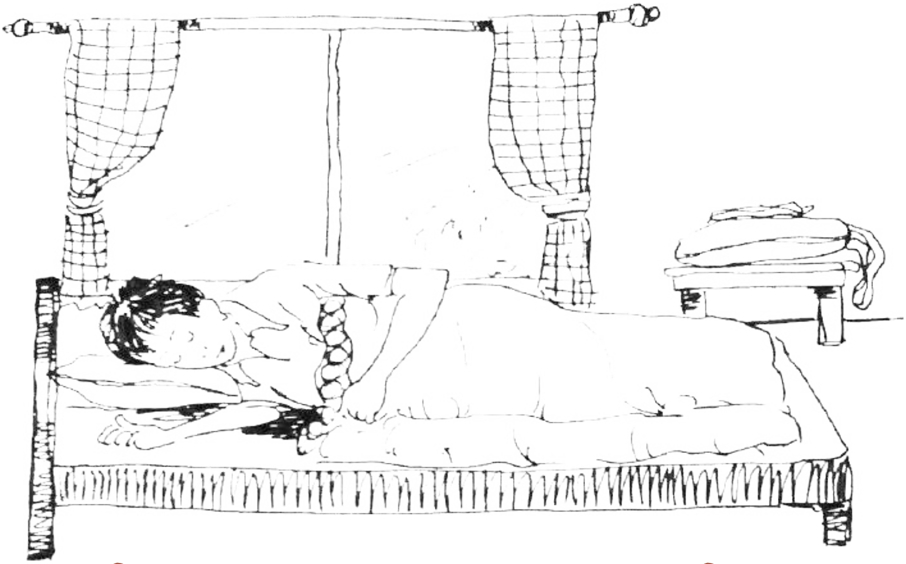

कौन रोता है ?

डॉ. मोहम्मद अरशद खान

पात्र–परिचय :

रोहन : लगभग 12–13 वर्ष का बालक

अजय : रोहन के पापा

रोहिणी : रोहन की मम्मी

नेपथ्य से आनेवाली आवाज : प्रौढ़ पुरुष की गंभीर आवाज

पहला दृश्य

(पर्दा उठने पर नीली रोशनी में डूबा रोहन का कमरा दिखाई देता है। दीवार पर लटकी घड़ी में रात के लगभग साढ़े ग्यारह बज रहे हैं। रोहन अपने बेड पर लेटा सो रहा है। सिरहाने एक खिड़की है जिसके पर्दे गिरे हुए हैं। नीले प्रकाश के कारण पूरा वातावरण रहस्यमयी हो रहा है। अचानक नेपथ्य से दर्द में डूबी आवाज सुनाई देती है)

आवाज : आह...मुझे बचा लो! बहुत दर्द हो रहा है...मेरी साँसें उखड़ रही हैं! मेरी रग–रग बिखर रही है। मेरा शरीर निचुड़ रहा है। है कोई जो मेरी आवाज सुन सके... ? मेरा दर्द समझ सके... ? है कोई... ?

(रोहन हड़बड़ाकर उठ बैठता है और जोर–जोर से चिल्लाता है)

रोहन : मम्मी...! पापा...!

(अजय और रोहिणी हड़बड़ाते हुए प्रवेश करते हैं। अजय कमरे की लाइट ऑन कर देते हैं।)

रोहिणी : क्या हुआ मेरे बेटे? क्या हुआ?

रोहन : (रोता हुआ लिपट जाता है) मम्मी...मुझे फिर से वही आवाज सुनाई दी।

अजय : (पास आकर सिर पर हाथ फेरते हुए) हमने तो कोई आवाज नहीं सुनी। हम लोग तो अभी जाग ही रहे थे। जरूर तुमने कोई सपना देखा होगा।

रोहन : नहीं पापा, कोई सपना नहीं था। मैंने सचमुच वह आवाज सुनी। जैसे कोई बहुत दर्द से कराह रहा हो।

अजय : (खिड़की खोलकर बाहर झाँकते हैं) देखो लॉन में भी कोई नहीं है। सड़क पर भी सन्नाटा छाया हुआ है। यह जरूर तुम्हारे मन का वहम है।

रोहन : नहीं पापा, आप मेरा विश्वास कीजिए। मैंने सचमुच वह आवाज सुनी थी।

(कहते–कहते रोहन की साँस उलझने लगती है। रोहिणी दौड़कर उसका स्प्रे उठाती है। स्प्रे लेने के बाद रोहन को चैन मिलता है। रोहिणी उसका सिर गोद में रख लेती हैं।)

रोहिणी : कोई बात नहीं। अब तुम सो जाओ। मैं तुम्हारे पास बैठी हूँ।

(रोहिणी अस्फुट स्वरों में कोई लोरी गुनगुनाती है। रोहन थोड़ी देर में सो जाता है। रोहिणी हौले से उसका सिर तकिए पर रखकर अजय के पास आ जाती हैं, जो दीवार की टेक लिए चिंतामग्न खड़े हैं।)

रोहिणी : (दबे स्वरों में) मुझे रोहन को लेकर बड़ी चिंता हो रही है।

अजय : (गहरी साँस लेते हुए) हाँ... फिक्र तो मुझे भी हो रही है।

रोहिणी : कहीं किसी बाहरी हवा का चक्कर तो नहीं?

अजय : (झुँझलाकर जोर से बोलने को होते हैं, पर रोहन को सोया देखकर आवाज धीमी कर लेते है।) पढ़ी–लिखी होकर मूर्खता की बातें मत करो। आज के जमाने में इस तरह के अंधविश्वास का क्या मतलब?

रोहिणी : पर बार–बार उसे इस तरह की आवाजें आखिर क्यों सुनाई देती हैं? कल दिन–दोपहर में रोहन कमरे–दालान में झाँकता फिर रहा था। मैंने पूछा क्या हुआ तो कहने लगा किसी के कराहने की आवाज आ रही है। यह सब जानकर मुझे तो बड़ा डर लग रहा है।

अजय : कुछ नहीं, यह सब उसके मन का वहम है। टीवी पर ऐसी–वैसी हॉरर (भुतहा)

फिल्में देखता रहता है। वही सब बातें मन में घूमती रहती हैं।

रोहिणी : पर इस वहम का भी तो कोई इलाज होगा ?

अजय : हाँ, किसी मनोचिकित्सक को दिखाना पड़ेगा।

रोहिणी : तो फिर कल ही दिखाते हैं। देर करना ठीक नहीं।

अजय : कल तो संभव नहीं। कल तो मैं मेहता जी से वादा कर चुका हूँ। उन्होंने बाग की जमीन पर पेट्रोल पंप खोला है। कल उसका उद्‌घाटन है।

रोहिणी : बाग की जमीन पर ?

अजय : हाँ, बाग के सारे पेड़ कटवा दिए उन्होंने।

रोहिणी : (हैरत से) पर वे तो हरे-भरे थे!

अजय : हाँ, पर उन्होंने सरकार से उन्हें काटने की परमीशन ले ली थी।

रोहिणी : उफ...(एक बार रोहन की ओर देखती हैं) पूरा शहर रेगिस्तान में बदलता जा रहा है। जहाँ देखो कंक्रीट का जंगल नजर आता है। हर तरफ धूल-धुआँ-शोर...साँस लेना मुश्किल होता जा रहा है।

अजय : पर यह भी तो हमारी जरूरत है। विकास के लिए छोटी-मोटी कुर्बानियाँ तो देनी ही पड़ती हैं। इंसान के ज़िंदा रहने के लिए हर बात जायज है।

रोहिणी : लेकिन...

अजय : अच्छा चलो, इस पर डिबेट सुबह कर लेंगे। अभी चलो सो जाओ और रोहन को भी चैन से सोने दो।

(रोहिणी अन्यमनस्क-सी कमरे की लाइट ऑफ करके अजय के पीछे-पीछे चली जाती हैं। लाइट बंद होते ही फिर दबे स्वरों में किसी के कराहने की आवाज आने लगती है।)

दूसरा दृश्य

(उसी कमरे को परिवर्तित करके लॉबी का रूप दे दिया गया है। रोहन एक किनारे बैठा कोई किताब पढ़ रहा है। अजय का प्रवेश। चेहरे पर थकान स्पष्ट दिखाई दे रही है। आते ही सोफे पर पसर जाते हैं। दूसरी ओर से पानी का गिलास लिए रोहिणी प्रवेश करती हैं।)

रोहिणी : बहुत थके लग रहे हैं। लीजिए, पानी पी लीजिए।

अजय : (पानी का गिलास हाथ में थामे हुए) उफ, पंद्रह मिनट जाम में क्या फँस गया, लगा कि प्राण ही निकल जाएँगे। गाड़ियों के शोर और धुँए से दम घुटने लगा। हवा जहरीली होती जा रही है। (पानी पीते हैं) ऐसा ही रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब हर आदमी ऑक्सीजन के सिलिंडर पीठ पर लटकाए घूमेगा।

रोहिणी : (अजय के बालों में अटकी पत्ती निकालते हुए हँसकर) अच्छा, तो यह सूखी पत्ती भी आपके साथ सैर कर आई।

अजय : (पत्ती को देखते ही अजय भड़क उठते हैं) इस कचनार ने तो तंग कर रखा है। सारा लॉन इसी की वजह से गंदा रहता है। जब-तब सूखी पत्तियाँ घर में बिखरी रहती हैं। वैसे भी यह सूख रहा है। इसे लगाए रखने का कोई फायदा नहीं। कल ही मजदूर बुलवाकर इसे कटवाता हूँ।

रोहन : (किताब बंद करके अजय की ओर घूमता है) लेकिन पापा, पूरी कॉलोनी में यह इकलौता पेड़ बचा है।

रोहिणी : पहले इसमें फूल आते थे तो कितना सुंदर लगता था यह पेड़!

अजय : हाँ, पर अब इसके दिन पूरे हुए। इसे लगाए रखने का कोई मतलब नहीं। इसे कटवाकर उस जगह पर फूलों के गमले रख देंगे। वे और सुंदर लगेंगे।

रोहन : लेकिन इस पर हर साल बुलबुल अपना घोंसला बनाती है, उसका क्या होगा ?

अजय : और जो दिन भर कौअे बैठकर बीट करते रहते हैं और काँव-काँव से कान पकाते रहते हैं, उसका क्या ?

रोहन : लेकिन पापा, क्या पेड़ों का हमारे जीवन में कोई महत्व नहीं ?

अजय : अब तुम मुझे किताबी बातें मत समझाओ। व्यावहारिक बातें करो। सिर्फ हमारे एक पेड़ बचा लेने से दुनिया हरी-भरी नहीं हो जाएगी।

रोहन : लेकिन हर कोई एक ही एक पेड़ बचाए तो ? किसी-न-किसी को यह शुरुआत तो करनी ही होगी।

रोहिणी : रोहन सही कह रहा है। अगर शहर का हर आदमी एक-एक पेड़ लगाए तो यह शहर फिर से हरा-भरा हो सकता है। ये जहरीली हवाएँ फिर से खुशबू भरे शीतल झोंकों में बदल सकती हैं। सुबह आँख खुलने पर चिड़ियों की चहचहाहट हमारा स्वागत कर सकती है। घने साए के तले खड़े होकर हम दो पल के लिए फिर से ऊर्जित हो सकते हैं।

रोहन : हाँ पापा, यह धरती हमें सब कुछ देती है। उसके लिए हम इतना भी नहीं कर सकते ?

(अजय गंभीर होकर सोचने लगते हैं।)

रोहन : हमारा कचनार खाद-पानी न मिलने से नहीं सूख रहा है। हमारी उपेक्षा ही उसे दीमक की तरह खाए जा रही है।

रोहिणी : उसी तरह जैसे घर के बुजुर्ग हमारी उपेक्षा से वक़्त से पहले बूढ़े हो जाते हैं।

रोहन : पेड़ों को बचाना सिर्फ पेड़ों को बचाना नहीं है, धरती पर जीवन को बचाना है। पेड़ नहीं रहे तो हम भी कहाँ रहेंगे ?

(अजय एकाएक उठ खड़े होते हैं। उनके चेहरे पर अंतर्द्वन्द्व दिखाई पड़ रहा है। अचानक वे तेज कदमों से बाहर चले जाते हैं। रोहन और रोहिणी एक–दूसरे की ओर अनजानी आशंका से निहारते रह जाते हैं। दो–एक पलों के सन्नाटे के बाद अजय फिर से प्रवेश करते हैं। उनके हाथों में नर्सरी से लाए नन्हे–नन्हे पौधों के पैकेट हैं।)

अजय : (मुस्कराते हुए पश्चाताप भाव से) मुझे माफ करना। मैं भौतिकता की दौड़ में अपना दायित्व भुला बैठा था। तुम लोगों ने मेरी आँखें खोल दीं। अब न केवल कचनार को सूखने से बचाएँगे बल्कि लॉन के खाली हिस्से में और भी पौधे रोपेंगे।

रोहन : (दौड़कर लिपट जाता है) सच पापा...आई लव यू।

(रोहिणी भावुक होकर दोनों को निहारती हैं।)

तीसरा दृश्य

(रोहन के कमरे का दृश्य। पूरे कमरे में वही रहस्यमयी नीली रोशनी फैली है। रोहन चादर ओढ़कर सोया हुआ है। दीवार पर लटकी घड़ी लगभग साढ़े ग्यारह बजा रही है। अचानक बाहर से किसी के मंद स्वरों में किसी के गुनगुनाने की आवाज सुनाई देती है। रोहन एकाएक उठ जाता है और जोर–जोर से चिल्लाता है)

रोहन : मम्मी...! पापा...!

(अजय और रोहिणी दौड़कर आते हैं। अजय कमरे की लाइट ऑन कर देते हैं।)

रोहिणी : क्या हुआ मेरे बच्चे... ? (लिपटा लेती हैं)

रोहन : (खुशी से चहकता हुआ) मम्मी..! पापा..! वही आवाज फिर मुझे सुनाई दी।

(रोहिणी और अजय हैरत से उसे देखते हैं)

रोहन : हाँ पापा, जैसे कोई खुश होकर गुनगुना रहा हो। जैसे ढेरों चिड़ियों की आवाजें घुँघरुओं की तरह खनक रही हों।

(रोहिणी अजय की ओर हैरत और संशय से देखती हैं)

रोहन : हाँ मम्मी, हाँ पापा, आप भी सुनिए, क्या आपको नहीं सुनाई दे रही वह आवाज ?

(अजय और रोहिणी कान लगाकर सुनने का प्रयास करते हैं। नेपथ्य से आनेवाली मधुर गुनगुनाहट तेज होती जाती है। उस आवाज में चिड़ियों की चहचहाहट और भौंरों की गुनगुनाहट भी है। आवाज के तेज होने के साथ ही रोशनी मंद पड़ती जाती है। धीरे–धीरे मंच पर अंधेरा छा जाता है।)

पर्दा गिरता है।

■■■

जाऊँगा मैं स्कूल

किरण सिंह

रोज मुझे बहलाकर मम्मी,
नहीं बनाओ फूल।
नाम लिखा दो मेरा भी अब,
जाऊँगा मैं स्कूल।
देखो मेरे भैया राजा,
कितने बनते स्मार्ट।
पढ़ना-लिखना मुझको भी है,
करना जल्दी स्टार्ट।
अभी बहुत छोटे हो बेटा,
जिद्द करो मत व्यर्थ।
पढ़ना-लिखना क्या है प्यारे,
पहले समझो अर्थ।
क-ख-ग-घ ए-बी-सी-डी,
वन टू एक दो तीन।
चलो पढ़ाती हूँ मैं तुमको,
उँगली पर गिन-गिन।

मान लिये गोलू राजा फिर,
मम्मी की यह बात।
लगे पढ़ाई करने घर में,
मन से वह दिन रात।
धीरे-धीरे गोलू राजा,
हो गये होशियार।
मम्मी-पापा भैया उनको,
करते प्यार-दुलार।
बड़े हुए जब गोलू राजा,
दिये स्कूल में टेस्ट।
दिये जवाब फटाफट सारे,
मार्क्स आ गया बेस्ट।
फिर मस्ती में गोलू राजा,
गये खुशी से झूम।
मम्मी पापा लिये गर्व से,
उनका माथा चूम।

■■■

कविता

प्रेजेन्स ऑफ माइंड

उमाशंकर 'मनमौजी'

कक्षा में जब की शैतानी।
टीचर बोला मिस्टर जॉनी।।
ब्लैक-बोर्ड के समीप जाओ।
जाकर तुम मुर्गा बन जाओ।।
वह बोला यह कर जाऊँगा।
पर मुर्गा बन मर जाऊँगा।।
आप फँसोगे मर्डर में यूँ।
क्योंकि फैला हुआ है 'बर्ड-फ्लू'।।
सुनकर टीचर सोच डर गया।
वह मरा तो मैं भी मर गया।।
टीचर बोला छोड़ो जॉनी।
अब से मत करना शैतानी।।
जो दिमाग तत्काल लगाता।
निकल मुसीबत से बच जाता।।
लाभ मिलेगा उसको इसका।
'प्रेजेन्स ऑफ माइंड' हो जिसका।। ■■■

बुरी बात है!

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

सबसे लड़ना
गुस्सा करना
थोड़ा पढ़ना
बुरी बात है!
दिनभर खाना
शोर मचाना
बाज न आना
बुरी बात है!
फूल तोड़ना
झूठ बोलना
व्यर्थ डोलना
बुरी बात है!
ज्यादा सोना
आपा खोना
रोना रोना
बुरी बात है!
दाँत पीसना
कान खींचना
गाल पीटना
बुरी बात है!
हाथापाई
छुपमछुपाई
खूब घुमाई
बुरी बात है!
■■■

कविता

झाड़ू जादूगरनी

पद्मा चौगांवकर

ऐ झाड़ू जादूगरनी,
अजब-गजब तेरी करनी।
जब चलती, पल में करती,
झाड़-झटक कर साफ-सफाई!
धूल-गंदगी, कीटक-जाले,
कहीं नहीं फिर रुकने वाले।
चमका-चमका घर मेरा,
कोने-कोने जादू तेरा।
जहाँ चले नित तेरा फेरा,
वहाँ लगे खुशियों का डेरा।
बीमारी-बेकारी भागे,
सब लाचार तेरे आगे।
दूर गंदगी करती आप,
लेकिन खुद रहती है साफ।
अजब-गजब तेरी करनी,
ऐ झाड़ू, जादूगरनी!!

भादों के बादल जी

दिनेश विजयवर्गीय

सावन निकला सूखा जी
सुनो भादों के बादन जी।
अब तुमसे ही आस हमारी
जमकर बरसो बादल जी।
धरती माँ तप रही अभी तक
शीतल इसे कर जाओ जी।
सूख रही खेतों में फसलें
हरा भरा कर जाओ जी।
नदिया झील सरोवर सूखे
इन्हें जल से भर जाओ जी।
वन्य जीव भी परेशान है
मुस्कान उनमें ले आओ जी।
झरने खूब बहें कल-कल
सैर सपाटे लगाओ जी।
बिजली चमके आसमान में
सतरंगी धनुष दिखाओ जी।
गाँव-गाँव में खुशियाँ आएँ
मंगल गीत सुनाओ जी।

दादी पर कविता

वैभव राज कौशल

दादी के प्यारे

दादी के हम प्यारे हैं,
हम उनके राज दुलारे हैं।
उनके बिना है घर अधूरा
उनके बिना परिवार अधूरा,
उनकी आँखों के तारे हैं
हम उनके राज दुलारे हैं।
हमसे पहले खुद नहीं खाती
पापा के गुस्से से हमें बचाती,
ख़ुशियों से भरे फव्वारे हैं
हम उनके राज दुलारे हैं।
हमसे इतना लाड़ लड़ाए
नई–नई कहानी सुनाए,
ज्ञान के खुले पिटारे हैं
हम उनके राज दुलारे हैं।

रेडियो दादी

दादी हमें सुनाओ कहानी,
जिसमें हो परियाँ की रानी।
कहानी सुनकर हम सो जाएँ,
मीठे सपनों में खो जाएँ।

राजू मोहन था हलवाई

राजू मोहन था हलवाई
खाता था भरपेट मलाई
पेट था उसका बहुत ही गोल
तर्बुजे जैसा गोल-मटोल
100 केजी खाता यह खाना
नहीं छोड़ता एक भी दाना
खाने के बाद गाता गाना
चाहिए इसे खाने का बहाना
हद से ज्यादा यह मोटा है
हाईट में भी बहुत छोटा है
खाने को ही अपना धर्म माने
कब पतला होगा भगवान ही जाने।

– अरिंदम कुमार

कौन है ?

शिखर के पीछे,
कौन हैं ?
जटा को खोले,
कौन हैं ?
चंद्रमा को
ललाट से,
मस्तक पर धारे
कौन हैं ?
गंगा की धार
बहाने वाले,
कौन हैं ?
शिखर को शिखर
बनाने वाले,
कौन हैं ?
शिखर जैसी जटा
चंद्रमा धारे बैठे,
कौन हैं ?

– सूरज कुमार

चीं–चीं

चीं–चीं–चीं–चीं
जब चिड़िया कहती
बाग–बगीचे में रहती
मीठा फल और दाना खाती
अपने पंखों को सहलाती
आस–पास ही रहती है
सबका मन बहलाती है
नील गगन में उड़ जाती है
अपने पंख को फैलाती है
सपनों में खो जाती है
रात होते ही सो जाती है
तब चीं–चीं चिड़िया कहलाती है
सुबह उठकर गीत सुनाती है।

– शबनम प्रवीण,
कक्षा–5वीं,
ज्ञान विज्ञान रेनबो होम

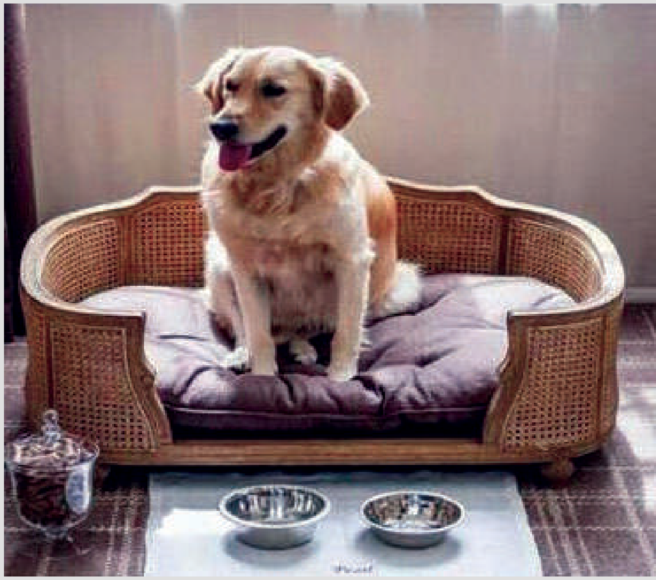

मेरा टॉमी प्यारा टॉमी

मेरा टॉमी प्यारा टॉमी
घरों की रखवाली करता है
किसी से वह नहीं डरता है
सबको प्यार जताता है
पसंद का खाना मन से खा जाता है
खेल–खेल में शाम बिताता है
दौड़–दौड़ कर थक जाता है
सोफे पे सो जाता है
मरते दम तक मालिक,
का साथ निभाता है।

– पलक

चुन्नू और मुन्नू की योजना

चुन्नू नाम की एक गौरैया थी। घने नीम के पेड़ पर उसका घोंसला था। कुछ ही दिन हुए थे उसे अंडे दिए हुए। हर रोज की तरह वह आज दाना ढूंढ़ने निकल पड़ी। चहकती फुदकती हुई वह एक पेड़ पर जा बैठी। फिर जब वह अपने घोसले में आई तो मानो उसके प्राण ही सूख गए। अगल-बगल ऊपर-नीचे सब जगह देखा, पर कुछ पता नहीं चला। चुन्नू गौरैया बहुत उदास हो गई। उसके अंडे घोसले में नहीं थे।

जब वह अपने अंडों को खोज रही थी, तो उसने देखा, कुछ दूरी पर उसके अंडे जमीन पर टूटे पड़े हैं। वह समझ नहीं पाई कि उसके अंडे यहाँ कैसे पहुँचे। उसे पेड़ के नीचे रहने वाली है उसकी दोस्त रानी चींटी ने उसे बताया कि यहाँ पर हाथी दादा आए थे। शायद उनसे टकराकर तुम्हारे घोंसले का अंडा गिर गया होगा। यह सुनकर वह बहुत रोई। उसने हाथी दादा से शिकायत की तो हाथी दादा ने कोई ध्यान नहीं दिया और उसे भगा दिया। तब चुन्नू चिड़िया ने हाथी दादा को सबक सिखाने की सोची। उसने अपने दोस्त रानी चींटी से मदद माँगी जिसके लिए रानी चींटी तुरंत तैयार हो गई। चुन्नू चिड़िया पता करके आई कि हाथी दादा कहाँ आराम कर रहे हैं। फिर चुन्नू चिड़िया रानी चींटी और उसके दोस्तों को अपने ऊपर बैठा कर हाथी दादा के ऊपर छोड़ दी। रानी और सारी चीटियाँ धीर-धीरे हाथी दादा के सूँड में चली गईं। वहाँ जाकर उन्होंने अपने रंग दिखाने शुरू कर दिए। हाथी दादा, जो नदी किनारे घोड़े बेच कर सो रहे थे, अचानक हुए इस हमले से घबड़ा गये। खूब सूँड हिलाए, चिंघाड़े, इधर-उधर दौड़े, पर कोई असर नहीं हुआ। उनको ज्यादा परेशान देखकर चुन्नू चिड़िया ने कहा अब आपको पता चला कि किसी को परेशानी होती है तो कैसा लगता है। हाथी दादा को अपने किये पर पछतावा होने लगा। उन्होंने चुन्नू चिड़िया से क्षमा माँगी। चुन्नू चिड़िया ने उन्हें क्षमा कर दिया और रानी को बाहर बुला लिया।

– **श्रियम गर्ग,** कक्षा-9वीं,
डॉ. दयाल पाटिल स्कूल।

कुछ–कुछ बनाना सीखें

प्यारे बच्चो,

फिर लेकर आया हूँ कुछ–कुछ बनाना सीखें गतिविधि। कुछ–कुछ बनाने से पहले विभिन्न अनाजों को थोड़ा–थोड़ा इकट्ठा कर लें। जैसे – गेहूँ, चना, आटा, मूँग इत्यादि या आपके पास कोई भी खाद्य पदार्थ हो। अब नीचे बनाई गई कुछ–कुछ आकृतियों को गौर से देखें और मनचाही आकृतियों उकेरने में जुट जाएँ। आप चाहें तो कुछ अलग–अलग कलाकृतियाँ भी बना सकते हैं। है न मजेदार गतिविधि! तो देर किस बात की, चलो–चलो कुछ–कुछ बनाना शुरू करें।

आपका कलंदर भैया

सुधीर

हिंदी के मिलवाँ शब्द (5)

अंकिमचंद्र

उकठ – कोई गुस्से में किये गये उपकार को जोर से बोल देता है तो उसे 'उकठना' कहते हैं। यह शब्द 'उत्' और 'कंठ' के मेल से बना है।

उपास – किसी व्रत में निराहार (कुछ नहीं खाने) को उपास रहना कहते हैं। कोई किसी कारण से भूखे भी रह रहा हो तो उसे भी उपासे रहना कहते हैं। यह शब्द 'उप' और 'वास' के मेल से बना है।

घरेली – यह शब्द नये घर में प्रवेश करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह शब्द 'घर' और 'हेली' (हेलना यानी प्रवेश करना) के मेल से बना है।

घरेलू – घर में बाहरी आदमी के लगातार रहने से उसे घरेलू कहा जाता है। घर में गाय, बैल, कुत्ता आदि पालतू पशुओं को भी घरेलू कहा जाता है। यह शब्द 'घर' और 'हेलू' के मेल से बना है। 'हेलू' का मतलब हेलने वाला, प्रवेश करने वाला।

छलाँग – यह शब्द फाँदने या उछल कर कूदने के लिए प्रयुक्त होता है। यह शब्द 'उछालना' और 'अंग' के मेल (मिश्रण) से बना है।

छतंगी – जब किसी बच्चे को हिचकी या लगातार छींक आती है तो दादा या पिता उसे 'छतंगी–छतंगी' कहते हैं। यह शब्द 'शतम्' (सौ) और 'जीवित' के मिश्रण से बना है। यह आशीर्वादी शब्द है।

चौपाया – चार पैर (पाया) वाले पशुओं के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है। यह शब्द 'चार' और 'पाया' के मेल से बना है।

अंगूरा (अमगूरा) – कच्चे आम को गुड़ में पाक कर बनाया जाने वाला मुरब्बा को अंगूरा या अमगूरा कहते हैं। यह 'आम' और 'गुड़' शब्दों के मेल से बना है। आमगुड़–आमगूरा–अंगूरा।

गुड़म्मा – यह शब्द भी अमगूरा के बदले में बोला जाता है। 'गुड़' और 'आम' के मेल से यह शब्द बना है। – गुड़आम–गुड़म्मा।

कजरौटी – काजल रखने की डिबिया को कजरौटी कहते हैं। यह शब्द 'काजल' और 'औटी' के मेल से बना है। यहाँ 'आटी' एक प्रकार का प्रत्यय है। काजलऔटी–कजरौटी।

सिलौटी – मसाला पीसने के लिए पत्थर के चौड़े लंबे टुकड़े सिलौटी कहते हैं। 'शिला' का अर्थ पत्थर होता है। 'शिला' में 'औटी' के मिलने से 'शिलाऔटी' बना और इससे हिंदी उच्चारण ने दोनों के मेल से 'सिलौटी' बना दिया।

सनीचर – शनिवार के लिए लोकभाषा में 'सनीचर' का प्रयोग होता है। यह शब्द दो शब्दों के मेल से बना है – 'शनैः (धीरे)' और 'चर (चलना)'। 'शनैः' का अर्थ है – धीरे–धीरे और 'चर' का अर्थ है चलने वाला। दोनों शब्द के मिलने से 'शनैचर' बना। यह शब्द शनि ग्रह के लिए बना है क्योंकि शनिग्रह सभी ग्रहों में सबसे धीरे चलनेवाला ग्रह है। हिंदी में इसको विमिश्रित कर 'सनीचर' बना दिया गया।

■■■

गलती आखिर किसकी है ?

अखिलेश श्रीवास्तव चमन

(1)

''लकड़ी की काठी, काठी पर घोड़ा। घोड़े की दुम पर जो मारा हथौड़ा।'' यह सोनू की आवाज थी।

''भागा, भागा, भागा घोड़ा दुम दबा कर भागा....दुम दबा कर भागा...।'' सोनू आगे की लाइन बोलती उससे पहले ही मोनू बोल पड़ा और घर की तरफ दौड़ पड़ा।

''अरे बुद्धू राम! भागा नहीं होता है, दौड़ा होता है। दौड़ा–दौड़ा–दौड़ा घोड़ा दुम दबा कर दौड़ा।'' सोनू ने कहा और वह भी मोनू के पीछे दौड़ पड़ी।

सोनू और मोनू स्कूल से लौट कर घर में घुसे तो देखा कि उनकी अम्मा आँगन में बैठी गेहूँ फटक रही थीं।

''अम्मा! जल्दी से खाना दो...। भूख के मारे मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।'' मोनू ने ठुनकते हुए कहा।

''चल...चल, जब तक बाहर मटरगश्ती करता रहता है तब तक भूख नहीं लगती है, लेकिन घर की ड्योढ़ी लाँघते ही तुमको भूख सताने लग जाती है ?'' अम्मा ने कहा, फिर सोनू से बोलीं–''सोनू बेटी! रसोई में खाना ढँका रखा है। हाथ–मुँह धो कर जाओ, खुद भी ले लो और अपने इस पाजी भाई को भी दे दो।''

वे दोनों खाना लेने रसोईघर में गए तो

देखा वहाँ एक भगौने में रोटियाँ तथा दूसरे में सब्जी ढँकी रखी थी। उसको देखते ही मोनू का पारा गरम हो गया।

''अम्मा..........। ये क्या...फिर वही रोटी और सब्जी? जा मुझे नहीं खाना है। आज तीन दिन हो गए भात नहीं बनाया तुमने।'' मोनू चिल्लाया और पाँव पटकते हुए रसोई घर से बाहर निकल गया। सुन कर उसकी अम्मा सरपट दौड़ी आईं।

''क्या हुआ मेरे लाल ? अभी तो तू कह रहा था कि बहुत तेज भूख लग रही है। और अब खाना देख कर नाक–भौं सिकोड़ने लगा। देखो तो तुम्हारे लिए कितनी बढ़िया आलू–टमाटर की मसालेदार सब्जी बनायी है मैंने।'' अम्मा ने मोनू को पुचकारा।

''रोज–रोज रोटी–सब्जी, रोटी–सब्जी। जाओ...मुझे नहीं खाना है रोटी। मुझे तो भात चाहिए।'' मोनू ने वैसे ही पाँव पटकते हुए कहा।

''ऐसा नहीं कहते बेटा। अन्न का अनादर नहीं किया जाता है। जो भी मिलता है उसे भगवान का आशीर्वाद समझ कर खुशी–खुशी खा लेना चाहिए।'' मोनू की अम्मा ने उसकी खुशामद करते, उसके सिर पर प्यार से हाथ फिराते हुए कहा। थोड़ी देर ना–नुकुर करने के बाद झख मार कर वह रोटी–सब्जी ही ले कर खाने बैठ गया।

कहना तो सोनू भी वही चाहती थी जो बात मोनू ने कही थी। रोटी–सब्जी देख कर मन तो उसका भी खिन्न हो गया था। लेकिन उसने कुछ कहा नहीं।

सोनू और मोनू। एक बहन, एक भाई। सोनू की उम्र थी दस साल और मोनू की आठ साल। दोनों अपनी माँ और पिताजी के साथ गाँव में रहते थे। दोनों अपने गाँव से आधा कोस दूर के प्राथमिक विद्यालय में साथ ही पढ़ने के लिए जाया करते थे।

भाई–बहन सोनू और मोनू पिछले कई दिनों से मन–ही–मन दुःखी थे। उनके दुःखी होने का कारण यह था कि पिछले कई दिनों से उनको खाने के लिए भात नहीं मिल रहा था जबकि उन दोनों को खाने में भात बहुत पसंद था। कोई जरूरी नहीं कि भात के साथ दाल भी हो, अगर रसदार सब्जी हो तो भी काम चल जाता था। अगर सब्जी न हो तो अचार के साथ खा लेते थे। और अगर अचार भी न हो तो भी कोई बात नहीं। भात को आधा चम्मच सरसों के तेल और चुटकी भर नमक के साथ सान कर खाने में भी मजा आ जाता था। बस भात जरूर होना चाहिए। खाने में अगर भात न मिले तो उनका पेट भले ही भर जाए लेकिन मन नहीं भरता था। लेकिन उनकी अम्मा थीं कि पिछले कई दिनों से भात बना ही नहीं रही थीं।

पहले घर में लगभग रोज ही भात बना करता था लेकिन पिछले कुछ महीनों से ऐसा नहीं हो रहा था। अब तीन–चार दिनों के बाद किसी दिन भात बनता था, वरना तीनों समय रोटी ही खानी पड़ती थी। सोनू तो कुछ नहीं कहती थी, मन मारे चुपचाप खा लिया करती थी, लेकिन मोनू बहुत नखरे करता था। रोटी देखते ही आपे से बाहर हो जाया करता था। तब अम्मा उसकी लल्लो–चप्पो कर के, बहला–फुसला कर खिलाती थीं।

जब भात खाए बगैर लगातार कई दिन बीत गए तो आखिर एक दिन शाम को सोनू

अपनी अम्मा से पूछ ही बैठी–''अम्मा, कई दिन हो गए तुम भात क्यों नहीं बनाती हो ? तुमको तो पता ही है कि न सिर्फ मेरा बल्कि मोनू का भी मनपसंद खाना भात ही है।''

''हाँ बेटी! मुझको पता है कि खाने में भात देख कर तुम दोनों का चेहरा खिल जाया करता है। खुद मुझको भी भात बहुत अच्छा लगता है। लेकिन क्या करें, मजबूरी है। भात तो तब बने जब घर में चावल हो। और चावल तब मिले जब धान हो। धान नहीं तो चावल नहीं। और जब चावल ही नहीं तो फिर भात कैसे बने भला ?''

''लेकिन ऐसा क्यों है अम्मा.... ? पहले तो भंडार घर में धान भरा रहता था। लेकिन अब ऐसा क्या हो गया कि घर में धान ही नहीं रहा ?'' सोनू ने पूछा।

इस साल हमारे खेत ने धोखा दे दिया है बेटी। इस बार पिछले साल के मुकाबले बहुत कम धान पैदा किया है हमारे खेत ने। धान की पैदावार कम हुई तो चावल भी कम हुआ। ऐसे में रोज–रोज भात बना सकना संभव नहीं है। जब तक धान की अगली फसल नहीं हो जाती तब तक हमें ऐसे ही काम चलाना पड़ेगा।'' अम्मा ने बताया।

''खेत ने धोखा दे दिया.... ?'' सोनू चौंक कर बोली।

''हाँ! इस साल खेत ने धोखा दे दिया। बात दरअसल यह है बेटी कि हम किसानों की सारी उम्मीदें खेती पर ही निर्भर रहती हैं। और खेती की हालत यह है कि अंत भला तो सब भला। अगर फसल अच्छी हो गई, अनाज सही–सलामत घर तक आ गया तो समझो मेहनत सफल है। और अगर फसल खराब हो गई तो सारे किए–कराए पर पानी फिर जाता है। इस साल धान की पौध ने शुरू में तो बहुत अच्छी बढ़त ली थी लेकिन

बाद में न जाने कौन–सा रोग लग गया कि बाली में दाने ही नहीं लगे। इस साल खेत से हमें पिछले साल के मुकाबले आधा से भी कम धान मिला है।'' अम्मा ने कहा।

जब सोनू और अम्मा के बीच यह बातचीत हो रही थी, उस समय मोनू भी पास ही खड़ा सुन रहा था। उसको अम्मा का यह कहना कि–''खेत ने धोखा दे दिया'' समझ में नहीं आया। आखिर वह पूछ ही बैठा–''अम्मा! यह धोखा देने का मतलब क्या होता है ?''

''बेटा! धोखा देने का मतलब होता है किसी की उम्मीद तोड़ देना...किसी की आशाओं पर पानी फेर देना। जैसे कि उम्मीद थी कि कम–से–कम छह–सात कुंतल धान जरूर पैदा हो जाएगा। लेकिन पैदा हुआ है केवल साढ़े तीन कुंतल। इसका मतलब कि हमारे साथ धोखा हो गया।'' अम्मा ने बतलाया।

बातचीत के बाद अम्मा घर के कामों में जुट गईं, सोनू अपना होमवर्क करने बैठ गई लेकिन मोनू का मन अशांत था। उसके दिमाग में अम्मा की कही बात–''खेत ने धोखा दे दिया....खेत ने धोखा दे दिया'' चक्कर काट रहा था। अपनी अम्मा को दुःखी देख कर उसे खेत पर बहुत गुस्सा आ रहा था। उसका मन हो रहा था कि अभी जाए और खेत से पूछे कि उसने धोखा क्यों दिया ?

(2)

रात में सोनू–मोनू साथ ही सोया करते थे।

''दीदी ! हमारा खेत तो बहुत बदमाश है। बेचारे बापू और अम्मा दोनों ही इतनी मेहनत करते हैं। सारे दिन खेती के कामों में जुटे रहते हैं, फिर भी इस बदमाश खेत ने धोखा दे दिया। मुझको तो खेत पर बहुत गुस्सा आ रहा है।'' मोनू ने सोते समय सोनू से कहा।

''हाँ भाई! मैं भी यही सोच रही हूँ कि हमारे खेत ने बहुत गलत काम किया है। जब बापू और अम्मा जी–जान से मेहनत करते हैं, खाद, पानी और दवाइयाँ आदि किसी भी चीज की कमी नहीं होने देते हैं, तो उसे भी ईमानदारी से पूरी फसल देनी चाहिए थी।'' सोनू बोली।

''तो चलो दीदी, चल कर पूछते हैं खेत से कि आखिर उसने ऐसी शरारत क्यों की।'' मोनू ने कहा।

''भैया! मन तो मेरा भी यही हो रहा है। लेकिन डर है कि पूछताछ करने से कहीं खेत नाराज न हो जाए। कहीं ऐसा न हो कि नाराज हो कर वह इस साल उपज और भी कम कर दे। फिर तो लेने के देने पड़ जायेंगे।'' सोनू बोली।

''अरे नहीं दीदी! खेत ऐसा कैसे कर देगा ? उसकी मनमानी है क्या ? जब बापू उसे पूरा खाद–पानी देते हैं, समय पर निराई–गुड़ाई करते हैं, तो वह हमें पूरा अनाज क्यों नहीं देगा ? तुम डर रही हो तो डरो लेकिन मैं तो चुप नहीं बैठूँगा। खेत से पूछूँगा जरूर।'' मोनू ने तैश में कहा।

''तो चलो। अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं भी साथ चलती हूँ।'' सोनू भी सहमत हो गई। फिर तो भाई–बहन अपने खेत से जवाब–तलब करने के लिए चल दिए।

''आओ...आओ बच्चो, आओ। बहुत दिनों के बाद आए हो तुम दोनों। पहले तो प्रायः अपने बापू या अम्मा के साथ तुम लोग आ जाया करते थे। लेकिन अब तो लगता है जैसे रास्ता ही भूल गए हो।'' सोनू और मोनू खेत की मेड़ के निकट पहुँचे ही थे कि उनको देख कर खेत बोल पड़ा।

''खेत जी! अब हम लोग पढ़ने के लिए स्कूल जाने लगे हैं। इसीलिए इधर नहीं आ पाते हैं।'' सोनू ने कहा।

''लेकिन बिटिया रानी! इतवार के दिन तो स्कूल की छुट्टी रहती है। उस दिन तो आ सकते हो तुम लोग? दरअसल मुझको बच्चों को देख कर खुशी होती है। कभी-कभार किसी छुट्टी के दिन घूमते-फिरते इधर आ जाया करो तुम लोग।''

''बातें न बनाओ खेत जी। तुम्हारा तो वही हाल है कि 'मुख में राम बगल में छूरी'। कह तो रहे हो कि बच्चों को देख कर खुशी होती है लेकिन सच बात यह है कि उनको परेशान करने में तुमको मजा आता है।'' मोनू गुस्से में बोला।

''क्या मतलब? तुम ऐसी कठोर बात क्यों कह रहे हो बेटा?'' खेत ने चौंक कर पूछा।

''मतलब यह है खेत जी कि आज हम भाई-बहन यहाँ घूमने नहीं बल्कि तुम्हारी धोखा-धड़ी का हिसाब लेने के लिए आए हैं।'' सोनू ने कहा।

''मेरी धोखा-धड़ी का हिसाब लेने? अरे! मैंने भला कौन-सी ऐसी गलती कर दी है जो तुम लोग इस तरह खरी-खोटी सुना रहे हो। तुम लोगों की ये बिना सिर-पैर की बातें मेरे पल्ले नहीं पड़ रही हैं।'' खेत बोला।

''गलती नहीं खेत जी, तुमने हमारे साथ धोखेबाजी की है। मेरे बापू और अम्मा ने इतनी मेहनत की थी, फिर भी तुमने इस साल बहुत कम धान पैदा किया है। इतना कम कि हमारे खाने के लिए भी दिक्कत हो गई है। धान की पैदावार कम होने कारण

हम लोगों को खाने के लिए भात नहीं मिल पा रहा है। रोज–रोज रोटी खानी पड़ रही है।'' मोनू ने वैसे ही गुस्से में कहा।

''अच्छा, तो ये बात है? मेरे प्यारे मोनू जी को इस बात का मलाल है कि उनको खाने के लिए भात नहीं मिल पा रहा है?'' खेत हँसते हुए बोला।

''हाँ, यही बात है। लेकिन हमारी बात को तुम हँसी में मत उड़ाओ। जवाब तो तुम्हें देना ही होगा कि तुमने इस साल धान की उपज कम क्यों कर दी।'' सोनू बोली।

''देखो बच्चो! तुम्हारी बात सही है कि इस साल मेरे अंदर धान की पैदावार कम हुई है। लेकिन इसमें मेरी जरा भी गलती नहीं है। मैंने तो पूरी ताकत लगा दी थी। फिर भी पैदावार नहीं बढ़ सकी तो क्या करूँ। इसी को कहते हैं कि करे कोई और भरे कोई। गलती दूसरों ने की है और बातें तुम लोगों की मुझको सुननी पड़ रही हैं।'' खेत ने कहा।

''अरे वाह! हमें बुद्धू समझते हो क्या? गलती अगर तुम्हारी नहीं तो फिर किसकी है? अन्न पैदा करने की जिम्मेदारी तो आखिर तुम्हारी ही है न।'' मोनू ने पूछा।

''देखो मोनू बेटे! कहा गया है कि जैसी करनी, वैसी भरनी। तुमको सुनने में खराब जरूर लगेगा लेकिन अगर सच कहें तो पैदावार कम होने में सबसे ज्यादा गलती तुम्हारे बापू की है। और थोड़ी गलती बादलों की भी है।'' खेत ने कहा।

''मेरे बापू की गलती? भला वो कैसे? मेरे बापू ने अपनी मेहनत में कोई भी कोर कसर नहीं छोड़ी थी। ठीक समय पर खाद डाली थी, कीटनाशकों का छिड़काव भी किया था, सिंचाई भी की थी, निराई भी की थी। फिर भला उनकी गलती कैसे हुई?'' मोनू बोला।

''अरे हाँ! तुमने खाद और कीटनाशकों का नाम लिया तो ध्यान आया। जानते हो ये रासायनिक खाद और कीटनाशक जो तुम्हारे बापू उपज बढ़ाने के लिए मेरे अंदर डाला करते हैं, वह धीमा जहर है।'' खेत ने कहा।

''धीमा जहर....? हम कुछ समझे नहीं।'' सोनू बोली।

''धीमा जहर का मतलब ऐसा पदार्थ जो हानिकारक तो होता है लेकिन सीधे और तुरंत नहीं हानि पहुँचाता है। अपना काम अप्रत्यक्ष रूप से धीरे–धीरे करता है। किसानों द्वारा खेतों में डाले जाने वाले रासायनिक खाद और कीटनाशक ऐसे ही पदार्थ हैं। देखने में तो लगता है कि इनके प्रयोग से पैदावार बढ़ गई है लेकिन वास्तव में खेत की मिट्टी के लिए, उस मिट्टी में उपजे अन्न को खाने वालों के लिए और यहाँ तक कि चरने वाले जानवरों के लिए भी इनका प्रभाव बहुत हानिकारक होता है। रासायनिक खादों से उपज की मात्रा तो बढ़ जाती है लेकिन उसकी पौष्टिकता और गुणवत्ता कम हो जाती है। न सिर्फ इतना बल्कि खादों और कीटनाशकों का कुछ अंश अन्न में ही बना रह जाता है जो खाने वालों के शरीर में पहुँच कर तरह–तरह की बीमारियाँ पैदा करता है।''

''तो तुम्हारे कहने का मतलब क्या यह है कि किसानों को अपने खेतों में खाद नहीं डालनी चाहिए?'' **(क्रमशः)**

पत्थर के टुकड़ों का कितना वजन

श्यामनारायण श्रीवास्तव

सेठ गया प्रसाद एक अच्छे व्यापारी हैं। सीमेंट, बालू, सरिया के साथ-साथ उनका लकड़ी का भी बड़ा कारोबार है। शहर में सेठ जी का बहुत बड़ा मकान है। लोग उसे मकान नहीं बल्कि सेठ जी की कोठी बोलते हैं। एक बार उस कोठी में कुछ मरम्मत का काम चल रहा था जिसमें बाहर से मँगाये गये कुछ कीमती पत्थर लगाये जा रहे थे। उसमें से कुछ पत्थर चालीस-चालीस किलो ग्राम के थे। एक दिन एक पत्थर ले जाते समय गिर कर टूट गया और उसके चार टुकड़े हो गये।

सेठ को बहुत दुःख हुआ। दुःख तो उस मजदूर को भी हुआ जो उस कीमती पत्थर को ले के जा रहा था। लेकिन क्या करे, अब तो गलती हो चुकी थी।

कुछ देर सोचने बाद सेठ ने उन चारों टुकड़ों का अलग-अलग वजन कराया। फिर कागज-कलम लेकर कुछ जोड़ा-घटाया। इसके बाद सेठ ने एक नौकर को बुलाकर कहा, ‘‘पत्थर के इन चारों टुकड़ों को लकड़ी की टाल पर ले जाओ। वहाँ जो आदमी लकड़ी बेचने के लिए रखा गया है, उसे ठीक से समझा दो कि इन चार टुकड़ों द्वारा एक से लेकर चालीस तक का कोई भी वजन किया जा सकता है। ये पत्थर के टुकड़े वहाँ लकड़ी बेचने के काम आएँगे।’’

नौकर की समझ में कुछ नहीं आया। ऐसे कैसे हो सकता है कि मात्र इन्हीं चार पत्थरों से कोई एक से चालीस तक के मतलब 1, 2, 3.....11, ..15....21..... 29....38....40 कोई भी वजन कर सकता है।

फिर सेठ ने उसे चारों पत्थरों का अलग-अलग वजन बताया और फिर यह भी बताया कि इन चार ही टुकड़ों से कैसे एक से चालीस तक सभी वजन किये जा सकते हैं? क्या आप बता सकते हैं कि सेठ ने नौकर को क्या बताया होगा?

उत्तर जानना चाहते हैं तो पत्रिका के अन्य पृष्ठों को पलटना होगा।

(शेष पृष्ठ-44 पर)

हिम्मत

मीनू त्रिपाठी

कूड़े का थैला लटकाए राजू रेडीमेड कपड़े की दुकान के सामने से निकला तो उसकी नज़र शोकेस में रखे मोम के पुतले पर पड़ी और रोज की तरह वह आज भी वहाँ रुक गया।

आज मोम के पुतले ने आड़ी–टेढ़ी लाइनों वाली सुंदर–सी टी शर्ट और हाफ पैंट पहन रखी थी।

एक बार तो उसे लगा कि वह भी मोम का पुतला बन जाए और सुंदर कपड़े पहनकर दुकान के बाहर यूँ ही पूरा दिन खड़ा रहे।

अपनी सोच पर राजू हँस दिया – अगर वह बढ़िया–बढ़िया कपड़े पहनकर एक जगह खड़ा हो जाएगा तो कूड़ा कौन बीनेगा।

माँ–बाबा की मदद कैसे होगी? घर में रोटी कैसे बनेगी? मुन्नी के लिए दूध कैसे आएगा?

एक बार फिर उसने नए कपड़े पहने मोम के पुतले को देखकर कहा, ''दोस्त, ये कपड़े तुम पर ही जँचते हैं। खड़े रहो, इन्हें पहनकर मैं ऐसे ही ठीक हूँ।''

यह कहकर वह फुटपाथ के किनारे पन्नी बीनने लगा।

कचरा उठाते–उठाते उसकी नजर पास ही फल के ठेले से फल खरीदते अंकल पर पड़ी।

अंकल उसकी बस्ती से लगे पक्के मकानों वाले मोहल्ले में रहते हैं।

एक बार वह गेट पर खड़े थे। उसे कचरा बीनते देख बोले, ''ए लड़के, तुम स्कूल क्यों नहीं जाते।''

यह सुनकर वह हँसकर बोला, ''जो स्कूल जाने के पैसे होते तो कचरा क्यों बीनता।''

अंकल कुछ कहते उससे पहले ही वह वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया।

आज उन्हीं अंकल को सेब, केला, संतरे से थैला भरते देख उसका मन ललचाया।

काश! एक सेब उसे भी मिल जाए तो वह उसे बिना काटे साबुत ही खा जाएगा।

नहीं–नहीं वह ऐसा नहीं करेगा। वह माँ को देगा। माँ सेब के दो टुकड़े करेंगी। आधा बाबा को और आधा उसे देंगी।

वह अपने हिस्से के तीन टुकड़े करेगा। एक माँ को, एक खुद लेगा और एक फाँक मुन्नी को देगा।

उसके पूरे दाँत नही हैं। वह चूस–चूसकर खाएगी।

चूस–चूसकर सेब खाती मुन्नी को यादकर उसके चेहरे पर मीठी–सी मुस्कान आई, पर तुरंत गायब हो गई, जब उसने ठेले के पास खड़े अंकल का पर्स गिरते देखा।

पर्स शायद पैंट की जेब में ठीक से घुसा नहीं था और नतीजा – ''अरे, अंकल जी आपका पर्स गिर गया'' वह बोलना चाहता था पर आवाज गले से नहीं निकली या शायद उसने निकाली ही नही।

अंकल चले गए तब वह कूड़ा उठाने के बहाने ठेले के पास झुका और पर्स उठाकर झटपट कूड़े के थैले में डाल दिया।

ऐसा करते हुए उसकी साँस धौंकनी की तरह चलने लगी।

राजू फिर वहाँ नहीं रुका और तेजी से घर की ओर चल दिया।

घर आने से पहले वह रुका और थैले में हाथ डालकर पर्स टटोला तो उससे कई नोट झाँकते मिले।

राजू की आँखों के सामने सुंदर–सुंदर कपड़े पहने मोम का पुतला नाच गया और सेब, केले, संतरे याद करके मुँह में पानी आया।

पर उसे चिंता थी माँ को क्या कहेगा। यह कहेगा कि पर्स सड़क पर पड़ा मिला। हाँ! तो सड़क पर ही तो पड़ा मिला। इसमें गलत क्या है? उसने मन–ही–मन खुद को तसल्ली दी।

पर ये क्या माँ ने उसे जोर से डाँटा, 'गलत ये है कि तुमने पर्स अंकल को नही लौटाया।'

उसने चौंककर आसपास नजर घुमाई। माँ कहीं नहीं थी।

राजू का दिल धकधक करने लगा। बाप रे! उसकी ऐसी हालत क्यों हो रही है? मन अशांत क्यों हो रहा है? कुछ तो उससे गलत हुआ है। कुछ नही, बहुत गलत हुआ है। तभी बाबा कहते हैं, ईमानदारी की रोटी में ही शांति मिलती है।

आज जब माँ रोज की तरह नमक के साथ रोटी यह कहकर उसे पकड़ाएगी कि ईमानदारी की रोटी हमारी छप्पन भोगों पर भारी तो वह हँसेगा कैसे? और स्वाद ले–लेकर खाएगा कैसे?

राजू कुछ देर तक वहीं सड़क के किनारे अनमना–सा खड़ा रहा। पर्स और पैसे पाकर उसे ख़ुश होना चाहिए पर वह ख़ुशी नहीं महसूस कर रहा था।

उसे घबराहट हो रही थी। निस्संदेह यह घबराहट पर्स मिलने के कारण हो रही थी।

नहीं, नहीं चाहिए उसे पर्स, उसने मन–ही–मन सोचा और सहसा उसने पर्स वाले अंकल जी के घर की ओर दौड़ लगा दी।

अंकल जी पर्स देखकर हैरान थे। राजू से पर्स लेकर उन्होंने रुपये गिने, फिर पूछा, ''तुम्हें कहाँ मिला ?''

राजू ने सर झुकाकर कहा, ''मैं कचरा बिन रहा था तो पड़ा मिला।''

''तुम्हें कैसे पता चला कि ये मेरा ही पर्स है ?''

''अरे, मैंने आपकी जेब से गिरते देखा न,'' सहसा राजू के मुँह से निकला तो अंकल मुस्कराए और बोले,

''अच्छे और सच्चे लड़के हो तुम...क्या नाम है तुम्हारा ?''

''हम राजू हैं।'' उसने बड़ी ठसक से जवाब दिया और महसूस किया कि पर्स लौटाते ही उसकी घबराहट गायब हो गई। हिम्मत वापस आ गई। मन भी हल्का बहुत हल्का हो गया था।

अंकल ने राजू से उसके घरवालों के बारे में पूछा। घर का पता भी पूछा।

दूसरे दिन सुबह–सुबह अंकल जी राजू के घर आए और उसके माँ–बाबा से मिलकर उसके पर्स लौटाने की बात कहकर उसकी खूब बड़ाई की।

जब अंकल जी चले गए तो माँ उससे बोली, ''राजू स्कूल जाएगा।''

"कौन भेजेगा ?" उसने पूछा।

"जिनका पर्स तुमने लौटाया है वो सरकारी स्कूल में शिक्षक हैं। तुम्हें ईमानदारी का इनाम देना चाहते है।"

माँ ने बताया तो राजू ने उत्सुकता से पूछा, "क्या देंगे इनाम में ?"

"कह रहे थे, अगर तुम खूब मेहनत करो तो वह तुम्हारा दाखिला सरकारी स्कूल में करवा देंगे।"

"मेहनत से कौन डरता है!"

राजू तपाक से बोला तो माँ उसे सीने से लगाकर बोली, "तू बड़ा हिम्मती है रे अब कल से कचरा उठाने के लिए नहीं स्कूल जाने के लिए घर से निकलना।"

"पर घर का खर्चा ?" राजू के चेहरे पर चिंता देख माँ बोली,

"उसकी चिंता मत कर। मुन्नी बड़ी हो गई है। अब उसे लेकर मैं तेरे बापू के साथ मजदूरी पर जा सकती हूँ।"

माँ की बात सुनकर राजू मुस्कराकर बोला, "फिर तो मैं खूब मन लगाकर पढ़ूँगा।" राजू की बात सुनकर माँ मुस्करा दी।

उनके कानों में राजू के अंकल जी की बात गूँज गई, "पर्स लौटाने के लिए हिम्मत की जरूरत थी। ऐसी हिम्मत आगे भी करे इसके लिए उसे शिक्षा का इनाम मिलना ही चाहिए।"

"हे प्रभु, मेरे बेटे की हिम्मत सदा बनाए रखना।"

राजू की माँ ने दोनों हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना की।

■■■

बाल किलकारी आपके घर

(सदस्यता पत्र)

नाम ....

घर का पता ....

....

....

....

.... पिन ....

फोन ....

मोबाइल ....

ई–मेल ....

प्रिय महोदय,

मैं एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष के लिए 'बाल किलकारी' पत्रिका की सदस्यता चाहता हूँ।

चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.............................

....

मूल्य ....

बैंक का नाम एवं शाखा ....

....

....

शुल्क केवल चेक, बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

बिहार बाल भवन किलकारी, पटना

के नाम से भेजें।

शुल्क भेजने का पता :

'किलकारी'

बिहार बाल भवन,
सैदपुर, पटना–800 004 (बिहार),
सम्पर्क नं0–9835224919, 7463878822,
फैक्स–0612–2661211,
ई–मेल– publication@kilkaribihar.in,
info@kilkaribihar.org,

नट बालिका और गार्गी

राजेश वर्मा

गार्गी अपनी बालकनी में खड़ी होकर उस नट बालिका की बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रही थी। उसे पता था कि वह आज इधर अवश्य आएगी। पिछले एक महीने से नट बालिका प्रायः तीन-चार दिनों के बाद गार्गी के मुहल्ले में अवश्य आती। उसके पिता मुहल्ले की गली के किनारे बाँस के दो खम्भे खड़े कर देते, दो छोरों पर, और उन खम्भों से लगभग दस मीटर की एक मोटी रस्सी बाँस देते, पूरी तरह खींच-खींचकर। उसकी माँ पास ही खड़ी होकर गाना गाने लगतीं, एक छोटा ढोल बजा-बजाकर। और उनके साथ ही खड़ी रहती एक छोटी बालिका, लगभग आठ-दस साल की, फ्रॉक पहनी हुई, जो अधिक साफ भी नहीं होती; पैरों में हवाई चप्पल; सिर पर दो चोटियाँ, रिबन बंधी हुई; और हाथ में कुछ बिस्किट जिन्हें वह वहीं पर खा रही होती।

इस बीच मुहल्ले के लोग, युवक-युवतियाँ, और बच्चे वहाँ पर एकत्र होने लगते। वे सब नट बालिका के माता-पिता को काम करते और गीत गाते हुए कुतूहल से देखते रहते। कुछ लोग नट बालिका से भी कुछ बोलते, पूछते, पर वह कुछ भी नहीं कहती, बस उन्हें देखती रहती। और उसके बाद उसके पिता जोर से कहते, 'हाँ भैया, बहन, बच्चे सब! तैयार हो जाइए इस बच्ची का खेल-तमाशा देखने के लिए। बच्चो, बजाओ ताली!' नट बालिका की माँ भी ढोल बजाकर उन्हीं शब्दों को दुहरातीं और गाना गातीं। उसके बाद उसके पिता बालिका को निर्देश देते एक छोर पर खड़े खम्भे पर

चढ़ने का। और देखते–ही–देखते बालिका लपक कर लगभग आठ फुट ऊँचे खम्भे पर चढ़ जाती। उसके पिता एक स्टूल पर खड़े होकर बालिका को सहारा देते और वह खाली पैर रस्सी पर अपने पैरों की उँगलियों को उलझा कर बैठ जाती। उसके बाद पिता उसे बाँस की एक लम्बी और पतली डंडी हाथों में पकड़ाते। अब बालिका पूरी तरह रस्सी पर खड़ी हो जाती। उधर उसकी माँ घूम–घूमकर गाना गाने लगतीं, पिता भी जोर–जोर से चिल्ला कर दर्शकों को संबोधित करते। और बालिका धीरे–धीरे अपने पैर रस्सी पर बढ़ाने लगती, डंडे को हाथ में पकड़े हुई। वह थोड़ा हिलती–डुलती, और धीरे–धीरे पैर बढ़ाती हुई रस्सी के दूसरे छोर तक पहुँच जाती। वहाँ से स्वयं पलट कर वह पुनः इस ओर आ जाती। ऐसा वह तीन–चार बार करती। रस्सी पर वह बड़े आराम से चलती। आस–पास खड़े लोग आश्चर्य से उस बालिका को देखते और तालियाँ बजाते। उसके बाद पिता उससे डंडा ले लेते और उसे एक बड़ी मटकी पकड़ाते जिसे बालिका अपने सिर पर रख लेती। पिता फिर उसे दूसरी मटकी, उससे छोटी, पकड़ाते जिसे बालिका बड़ी मटकी के उपर रखती। इसी प्रकार एक और मटकी। अब वह तीनों मटकियों को सिर पर लेकर रस्सी पर खड़ी हो जाती, और हाथों में डंडा लेकर चलती, एक छोर से दूसरे छोर तक, और फिर वहाँ से वापस। नट बालिका का यह खेल–तमाशा लगभग एक घंटे तक चलता। लोग हँसते, तालियाँ बजाते, और नीचे बिछी एक चादर पर पैसे फेंकते। तमाशा समाप्त होता, बालिका नीचे कूद जाती और चुपचाप खड़ी रहती। माता पैसों को उठाती, पिता रस्सी और खम्भों को खोलने लगते। और सबको प्रणाम कर वे सब वहाँ से चल पड़ते दूसरे मुहल्ले की ओर।

गार्गी भी यह सब देखती। पर वह नीचे नहीं उतरती। अपनी बालकनी से ही तमाशा देखती। एक दिन नट बालिका और गार्गी दोनों की आँखें एक क्षण के लिए मिलीं, जब बालिका रस्सी पर चल रही थी। अब बालिका जब भी उधर मुड़ती, उसे गार्गी दिख जाती। गार्गी एक बार उसे देखकर मुस्करा दी। बालिका भी मुस्कराई। बालिका नीचे उतर चुकी थी। सब लोग उसे देख रहे थे। कुछ उसकी फोटो भी ले रहे थे। पर बालिका एक टक गार्गी को देख रही थी। गार्गी हँसी, बालिका भी हँसी। जाते समय बालिका गार्गी को मुड़–मुड़कर देखने लगी। गार्गी ने अपना हाथ हिलाया, बालिका ने भी हँस कर हाथ हिलाया।

उस दिन गार्गी उस नट बालिका का इंतजार कर रही थी। पर वह नहीं आई। दूसरे सप्ताह भी वह नहीं आई। गार्गी उदास हो गई।

कुछ दिनों बाद गार्गी का स्कूल खुल गया। अब वह एक नई कक्षा में थी, तीसरी कक्षा में। गार्गी अपनी बेंच पर बैठी थी। आस–पास बच्चे शोर मचा रहे थे। वह मुड़कर उन्हें देखने लगी। तभी आहट हुई और एक छोटी बच्ची उसकी बगल वाली सीट पर आकर बैठी। गार्गी ने उसे देखा। दोनों की आँखें मिलीं। दोनों ने एक–दूसरे को पहचाना। और दोनों हँस पड़ीं। वह नट बालिका थी।

■■■

सूझ-बूझ ने बचायी जान

उषा सोमानी

अनुज आनंद नगर में रहता था। शहर में दो दिवसीय मेले का आयोजन था। अनुज को मेले में घूमने का बड़ा मन था। परंतु पिताजी बीमार थे और माँ को घर के काम से समय नहीं मिलता।

मोहल्ले के बच्चे अपने-अपने माता पिता के साथ मेले में जा रहे थे। अनुज उदास था। दादाजी ने पूछा, ''मेरा लाडला आज उदास क्यों बैठा है ? आज खेलने नहीं जाएगा ?''

''किसके साथ खेलूँ ? सभी मेले में घूमने गए हैं।'' अनुज ने रुआँसे स्वर में कहा।

''अच्छा यह बात है, इसीलिए मेरा लाडला मुँह लटका कर बैठा है। हम दोनों मेले चलेंगे,'' दादाजी ने कहा।

दादाजी की बात सुन अनुज खुश हो गया। दादा जी ने अपनी साइकिल ली और अनुज को बैठाकर मेले जाने के लिए रवाना हुए। घर से थोड़ी ही दूर निकल मुख्य सड़क पर पहुँचे। तभी अचानक पीछे से आती तेज गाड़ी ने साइकिल को टक्कर लगा दी।

''अरे राम!'' दादाजी के मुँह से चीख निकली। साइकिल लहरायी। दादाजी और अनुज सड़क पर बाँई ओर गिर गए। अनुज ने साइकिल को धक्का देकर अपना पैर निकाला। हाथों में लगी मिट्टी को झाड़ा।

''दादाजी उठिए। आपको चोट तो नहीं लगी,'' सहमे हुए अनुज ने दादाजी को पूछा।

''दादाजी बोल क्यों नहीं रहे हैं ? दादाजी उठिए,'' अनुज रोने लगा।

अनुज ने रोते हुए आती-जाती गाड़ियों को हाथ से रोकने की कोशिश की। अनुज हताश हो गया। उसकी मदद के लिए कोई नहीं रुका।

''क्या करूँ अब ?'' अनुज सोचने लगा। अचानक उसे कुछ याद आया। उसने

दादाजी की जेब से मोबाइल निकाला और 108 नंबर लगाया। घंटी बजने लगी। घंटी की आवाज से अनुज को संबल मिला।

''हाँ, हेलो! मैं अनुज बोल रहा हूँ। मेरे दादाजी साइकिल से गिर गए हैं और बेहोश हो गए हैं। आप जल्दी आ जाइए।''

दूसरी तरफ से आवाज आयी, ''अपना लोकेशन बताओ।'' अनुज नजर घुमाकर चारों तरफ देखने लगा और बोला, ''नदी की पुलिया पर।''

पुलिया से अनुज की स्कूल के प्रिंसिपल सर 'शर्मा जी' और उनकी पत्नी शहर की तरफ जा रहे थे। उन्होंने सड़क पर एक साइकिल और वृद्ध को गिरे हुए देखा तब गाड़ी रोकते हुए शर्मा जी अपनी पत्नी से बोले, ''देखो ये रोता हुआ बालक अनुज है?''

''हाँ... हाँ ये अनुज है। अपने स्कूल में पढ़ता है,'' श्रीमती शर्मा ने कहा।

''क्या हुआ अनुज? तुम रो क्यों रहे हो। दादाजी नीचे कैसे गिरे?'' श्रीमती शर्मा ने पूछा।

तभी 108 एम्बुलेंस का सायरन सुनाई दिया। अनुज ने अपनी टीचर को सारी घटना बतायी। 108 एम्बुलेंस आकर रुकी। दादाजी को लेकर अस्पताल गए।

शर्मा जी ने अनुज को गाड़ी में बैठने के लिए कहा और वे भी एम्बुलेंस के पीछे अस्पताल चल दिए।

''डॉक्टर साहब, कोई चिंता की बात तो

नहीं है ?'' शर्मा जी ने पूछा।

''आप सही समय पर इन्हें ले आए। वृद्धावस्था और झटके के सदमे से बी.पी.लो होने से बेहोश हो गए। ड्रिप के साथ इंजेक्शन लगा दिया है। मामूली खरोंचे हैं। ड्रेसिग कर दी है, चिंता की कोई बात नहीं,'' डॉक्टर साहब ने बताया।

श्रीमती शर्मा अनुज के आँसू पोंछते हुए बोली, ''तुम्हें 108 एम्बुलेंस कैसे याद आई ?''

अनुज बोला, ''एक दिन मम्मी और पड़ोस वाली रजनी आंटी बातें कर रहे थे। कौशल के दादाजी को हार्ट अटैक आया, तब उन्होंने फटाफट 108पर फोन कर एम्बुलेंस बुलायी थी। मुझे याद रह गया और मैंने 108 पर फोन कर एम्बुलेंस बुलायी।''

''शाबाश अनुज! तुम्हारी नन्ही सूझ–बूझ ने दादाजी की जान बचायी,'' अनुज की पीठ थपथपाते हुए शर्मा टीचर बोलीं।

''दादाजी को होश आ गया है। दादाजी अनुज को बुला रहे हैं,'' प्रिंसिपल शर्मा सर ने कहा।

''तुम्हें कहीं चोट तो नहीं लगी बेटा,'' दादाजी चिंतित स्वर में बोले।

''दादाजी, मैं ठीक हूँ। आप कैसे हैं ?'' अनुज ने पूछा।

शर्मा टीचर ने दादाजी को पूरा घटनाक्रम बताया।

दादाजी के मुख पर गर्व से मुस्कान की तेजी छा गई और वे रूँधे हुए गले से बोले, ''मेरा लाड़ला बड़ा होकर बहुत अच्छा इंसान बनेगा।''

■■■

(पृष्ठ–35 का शेष)

(पहेली का उत्तर : पत्थर के टुकड़ों का कितना वजन)

उत्तर – 1, 3, 9, 27 अर्थात वह पत्थर जिन चार भागों में टूटा था। वे एक (1), तीन (3), नौ (9) और सत्ताईस (27) किलोग्राम के वजन के बराबर थे। जिनसे वह निम्नलिखित तरीकों से एक से लेकर 40 कि0ग्रा0 तक के भार को तौल सकता है।

जैसे 1 के लिए 1, 2 के लिए 3–1, 3 के लिए 3, 4 के लिए 1+3, 5 के लिए (9–3–1), 6 के लिए (9–3), 7 के लिए (9+1–3), 8 के लिए (9–1) इसी तरह 10 (9+1), 11(9+3–1), 12(9+3), 13(9+3+1), 14(27–9–3–1), 15(27–9–3), 16(27+1–9–3), 17(27–9–1), 18 (27–9), 19(27+1–9), 20(27+3–9–1), 21(27+3–9), 22(27+3+1–9), 23(27–1–3), 24(27–3), 25(27+1–3), 26(27–1), 27(27), 28(27+1), 29(27+2), 30(27+3), 31(27+3+1), 32(27+9–3–1), 33(27+9–3), 34(27+9+1–3), 35(27+9–1), 36(27+9), 37(27+9+1), 38(27+9+3–1), 39(27+9+3), और चालीस के लिए चारों पत्थर 40(27+9+3+1)

■■■

बौरा

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

बात पुरानी है, पर है सच। गाँव के बच्चे उसे बौरा कहकर चिढ़ाते थे। उस पर कंकड़ फेंकते। वह आं-आं-आं कर चिल्लाता तो सब ताली पीट-पीट हँसते। हाँ, अगर मेरी माँ देख लेतीं तो बच्चों की शामत आ जाती। वे बच्चों को डाँटती। सब नौ दो ग्यारह हो जाते। माँ उसे बुलाकर कुछ-न-कुछ खाने को देतीं। वह चबूतरे पर बैठ जाता। जल्दी-जल्दी खाता। कभी इधर देखता तो कभी उधर। माँ कहतीं, आराम से खा ले। कोई तुझे तंग न करेगा।

उसका कोई नहीं था। न माँ, न बाप। माँ बतातीं, मैंने इसकी माँ देखी है। वह भी गूंगी थी। सब उसे बौरी बुआ कहते थे। वह जिसके-तिसके घर चौका बरतन कर देती और लोग उसे कुछ खाने-पीने को दे देते थे। बौरी बुआ को भेड़िए ने मार दिया था। तब यह मुश्किल से दो साल का था। इशारे में ही बात करता था। इसकी बूढ़ी दादी ने इसे जैसे-तैसे पाला। थोड़ा बड़ा हुआ तो सबने जाना कि यह भी गूंगा है। बाद में इसकी दादी भी नहीं रहीं। बेचारा निपट अकेला रह गया। अब तो वह 15-16 साल का किशोर था। तगड़ा तंदुरुस्त भी। परेशान करने वाले बच्चों में से अगर वह एक को भी पकड़ लेता तो क्या मजाल कि सारे मिलकर भी उसे छुड़ा पाते। लेकिन वह कभी कुछ कहता ही नहीं। बच्चे चिढाते तो बस भाग लेता। कई बार तो बच्चे उसे गाँव के बाहर तक छोड़ आते। वह वहाँ ताल के पास बैठा रहता। ताल में कंकड़ फेंकता। कई बार तो ताल में घुस जाता। जलकुंभी तोड़ता। उसके पैर मिट्टी से सन जाते। वह बाहर निकलकर पीपल के पेड़ के पास बैठ जाता। दिन भर बैठा रहता। मिट्टी

उसके पैरों में सूख जाती। वह उसे छुड़ाता और आजू–बाजू घूरता।

हमारे गाँव के उत्तर में बहुत बड़ा जंगल था। बहुत ही बड़ा। मीलों लंबा। जंगल के इर्द गिर्द और भी गाँव थे। मेरे गाँव के कई लोग वहाँ लकड़ी बीनने जाते। इधर बौरा भी जंगल जाने लगा था। लोग उससे काम कराते और थोड़ा बहुत खाने को दे देते। वह खुश हो जाता। अब तो जंगल जाना उसके लिए आम बात हो गई थी। वह लकड़हारों की राह तकता। कब कोई दिखे और वह साथ चल पड़े। अब तो वह दिन में गाँव में दिखता ही न था। मैंने एक दिन गुस्से में बच्चों से कहा, वह तुम सबके कारण अब गाँव में नहीं दिखता।

बच्चों ने तालियाँ पीटीं – हाँ, वह डरता है हमसे। डरपोक कहीं का।

मेरा मन हुआ कि मैं जोर से कहूँ कि नहीं, वह डरपोक नहीं। लेकिन मैं चुप रहा। दरअसल मेरी माँ कहतीं थीं – किसी से भी न उलझो। बहस अच्छी बात नहीं होती। बहस ही लड़ाई में बदल जाती है।

फिर भी मुझे चुप रहकर बुरा लगा था। मेरा मन हमेशा कहता कि वह डरपोक नहीं है। वह डरपोक होता तो क्या ताल में घुस जाता? पेड़ पर चढ़ जाता? जंगल से अंधेरे में आता?

याद आया, एक दिन रात में हमारे चबूतरे पर आहट–सी हुई। हमारे गाँव में तब बिजली न थी। रात को डर लगता था। शाम होते ही सन्नाटा पसर जाता। झींगुरों की आवाज डराती थी। आधी रात में तो अक्सर सियार की हुआ–हुआ शुरू हो जाती थी। हम बच्चे तो दुबक ही जाते थे। उस दिन हवा भी तेज चल रही थी। तेल की कुप्पी बार–बार बुझी तो लैंप जलानी पड़ी। लैप का शीशा भी उस दिन ठीक से साफ नहीं हुआ था।

कौन है? माँ जोर से चिल्लाईं। उधर से कोई आवाज नहीं। पड़ोस की दीवार से चाचा ने माँ का चिल्लाना सुना तो पूछा, ''क्या हुआ?''

''देखो भैया, दरवाजे पर कोई है।''

धीरे–धीरे बाहर जाकर देखा गया तो बौरा खड़ा था। हाथ में ढेर सारे कमल। माँ हँस पड़ीं, ''अच्छा तो तू है?''

वह मुस्कुराया और कमल मेरे हाथ में थमा दिए।

माँ ने इशारे से पूछा, खाना खाएगा तो वह चबूतरे पर ही बैठ गया। उसने खाना खाया और लंबे–लंबे डग भरते हुए चला गया।

अब तो वह फिर आए दिन शाम को मेरे घर आ जाता। जंगल से कभी फूल लाता तो कभी फल। कभी–कभी लकड़ी भी दे जाता। माँ मना करतीं तो वह इशारे से खाने के लिए मना करता। मतलब अगर आप उसकी दी हुई चीजें नहीं लेंगे तो वह भी आपसे खाना नहीं लेगा।

एक दिन रात में हम लोग गहरी नींद में थे। जोर का शोर गूँजा। पता चला कि गाँव में भेड़िया आया था। राशिद काका की बकरी उठाकर भाग रहा था। लोगों ने लाठी डंडे लेकर उसका पीछा किया मगर उसने बकरी को नहीं छोड़ा तो नहीं छोड़ा। बौरा भी साथ में दौड़ा था। सबने भेड़िए को गाँव के बाहर तक दौड़ाया। भेड़िया जैसे हवा हो गया। किसी की भी पकड़ में न आया। सब हार थक कर वापस लौट आए। लेकिन एक अजीब बात हुई। वापस आए तो देखा बौरा तो साथ में था ही नहीं। उसके ठिकाने पर भी

जाकर देखा गया। तो क्या... ? वह भेड़िए के पीछे जंगल चला गया था ?

शायद हाँ...।

सब उसे आवाज लगाते रहे। देर तक उसकी ही बात करते रहे। हाँ, भला आधी रात में उसे खोजने जंगल कौन जाता तो सब अपने अपने घर लौट गए। उस रात मुझे नींद नहीं आई। बस सुबह का इंतजार था।

सुबह काफी लोग जंगल गए। दूर तक बौरा को बहुत खोजा गया पर वह नहीं मिला।

सबका मन बहुत दुखी था।

बौरा गया तो गया कहाँ ?

मुझे तो रोना आता था। क्या भेड़िया उसे भी खा गया ?

...

कोई दस दिन बाद बहुत दूर के एक गाँव से खबर आई कि भेड़िया मारा गया। मेरे गाँव से कई लोग उसे देखने गए। पता चला कि किसी अनजान इंसान ने उसे मार गिराया। सब भौचक थे। वह अनजान और कोई नहीं, बौरा ही था। गाँववालों ने बताया कि पिछले दस दिनों से हम लोग इसे जंगल में भटकते देख रहे थे। लोगों ने इससे पता ठिकाना जानना चाहा तो ये बता नहीं पाया। साथ चलने को कहा तो आया नहीं। शायद यह इसी भेड़िए को पकड़ने की फिराक में मारा–मारा घूम रहा था।

बौरा गाँव आ गया। आ क्या गया, सब उसे सम्मान सहित लेकर आए। यह कहते हुए कि अरे! यह तो हमारे गाँव का है। हमारे गाँव में तो बच्चा–बच्चा वीर है।

भेड़िए से भिड़ने में बौरा को चोटें भी खूब आई थीं। कई जगह जख्म भी थे।

गाँववालों ने उसकी बहुत सेवा की।

खासकर उन बच्चों ने तो खूब ही, जो कहते थे कि वह डरपोक है।

■■■

जानकारी

नन्ही रामकथा वाचक : 11 वर्षीय की भाविका माहेश्वरी सुना रही है रामकथा

शिखर चंद जैन

जब कोरोनाकाल के लॉकडाउन में हम बड़े और ज्यादातर बच्चे चिंताग्रस्त थे या सोकर अथवा खेलकूद में समय व्यतीत रहे थे, ऐसे में सूरत की 11 वर्षीय बच्ची भाविका माहेश्वरी जो अभी क्लास 6 की स्टूडेंट है, वह कुछ और ही प्लान कर रही थी। हम सब की तरह भाविका भी चर्चित धार्मिक धारावाहिक रामायण देखती थी। लेकिन उसने इसे सिर्फ देखा ही नहीं अपितु अपने हृदय में उतार लिया। उसने इसके निहितार्थ समझे। रामचरितमानस पढ़ा, उसके प्रसंगों को याद किया। फिर उसने अपनी भाषा और शैली में रामकथा सुनाने का अभ्यास किया। उसके इस प्रयास में उसके शिक्षित और संस्कारवान पिता राजेश माहेश्वरी और माँ मनीषा माहेश्वरी ने उसकी मदद भी की और उसे प्रोत्साहित भी किया।

राममंदिर निधि संग्रह में सहयोगी बनी। जब उसकी तैयारी पूरी हो गई तो उसकी सदिच्छा के कारण प्रभु श्री राम ने भी उसे अपनी सेवा का सुनहरा सुअवसर दिया। सूरत में जब अयोध्या के श्री राम मंदिर हेतु निधि संग्रह का अभियान शुरू हुआ तो 15 जनवरी 2021 को भाविका ने वहाँ के माहेश्वरी भवन सभागार में संगीतमय श्री रामकथा पाठ की अपनी पहली प्रस्तुति दी।

यह कार्यक्रम श्रद्धालुओं ने खूब पसंद किया। इसके बाद उसने जब रामकथा सुनाने का अभियान प्रारम्भ किया तो वह इतना लोकप्रिय हुआ कि अब तक उसकी 7 कथाओं से ही राम मंदिर निर्माण हेतु 52 लाख रुपये से अधिक की समर्पण निधि संग्रहित हो चुकी है। भाविका को अब तक नेपाल और दुबई से भी राम कथा वाचन के लिए निमंत्रण मिल चुके हैं। समय और सुविधा के अनुसार वह वहाँ जाने की इच्छा रखती है।

भाविका की माँ शिक्षिका एवम् स्कूल संचालक हैं। वे सूरत में 15 प्री स्कूल एवम् 2 बड़ी स्कूलों का संचालन कर रही हैं। उनकी मेहनत और मार्गदर्शन के परिणाम स्वरूप आज भाविका व्यास कथाकार के रूप उभर कर सामने आ रही हैं। भाविका की कथा का श्रवण करने वालों में जैन मुनि, मुस्लिम समुदाय के लोग और नागपुर जेल के कैदी भी शामिल हैं। जब उसने नागपुर जेल में रामकथा का पाठ किया तो उसे जबरदस्त सराहना मिली। महिला कैदियों ने उससे मिलकर बधाई दी, और उसके प्रति स्नेह जताया। ■■■

महानायक : लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (अंतिम किस्त)

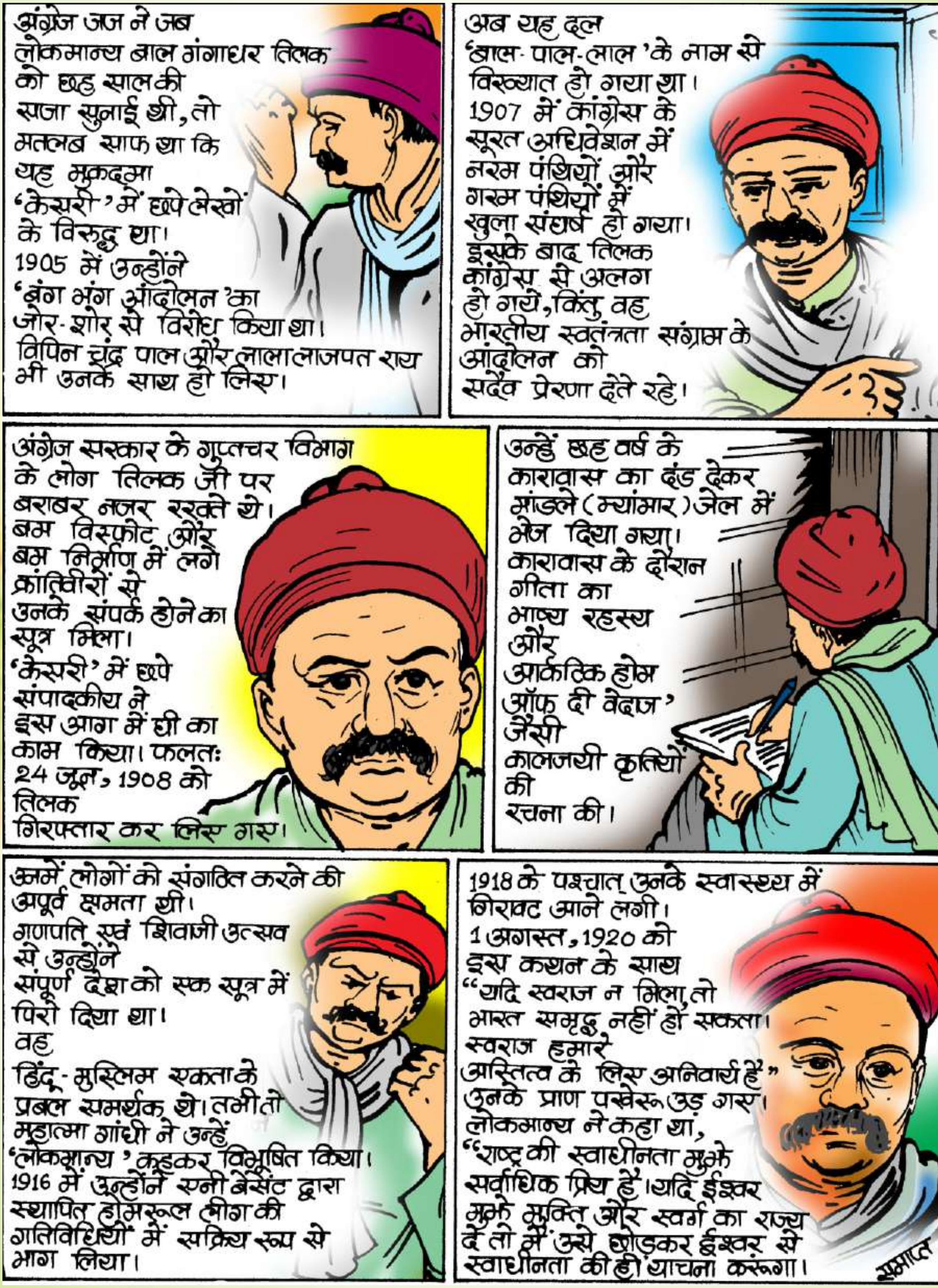

पत्रिका यहाँ से भी प्राप्त करें
Amazon

'किलकारी'

बिहार बाल भवन

सैदपुर, पटना– 800004 (बिहार) भारत

: 9835224919, 7463878822 : 0612-2661211

: publication@kilkaribihar.in, info@kilkaribihar.org

: www.kilkaribihar.in : www.facebook.com/kilkaribihar

: kilkaribihar.blogspot.in : www.youtube.com/kilkaribihar